राजस्थानी पद्य संग्रह

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान री राजस्थानी साहित्य री माध्यमिक]
कक्षा वां री पद्य री पाठ्यपुस्तक]

सम्पादक :

कोमल कोठारी

निदेशक

रूपायन संस्थान बोरूंदा, जोधपुर

शार्दूलसिंह कविया

प्रधानाचार्य

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जैसलमेर



[माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के अधिकार द्वारा प्रकाशित]

स्टूडैन्ट ब्रादर्स एण्ड कम्पनी

भरतपुर

प्रकाशक :

स्टूडेण्ट ब्रादर्स एण्ड कम्पनी,

भरतपुर

फोन नं. : २०३६ दुकान
२३२६ निवास

यह पुस्तक राज्य स्तरीय कागज आवंटन समिति के मार्फत भारत सरकार द्वारा प्रदत्त सस्ते मूल्य के कागज पर छापी गई है।

मूल्य :

मुद्रक :

मित्र मण्डल प्रेस,

भरतपुर-३२१००१

सम्पादकीय

राजस्थान काव्य री परम्परा बारह सौ बरसाँ सूँ अखूट चालै। उण मांस एक संकळन जोगो कवितावाँ छाँटणो सरळ कांम नीं हो। किण कवियाँ नैं टालां अर टाल्योड़ा कवियाँ री किसी कवितावां छोड़ाँ अर किसी छाँटा। इण खातर सरू पोत आ बात माँन लेणी चाहीजै के ओ संकलन राजस्थानी काव्य परम्परा री एक बानगी मात्र है, जण सूं राजस्थानी काव्य रो विड़द आसांनी सूं कू तीज सकै।

राजस्थानी काव्य ने आपरी इतिहासू माठ में ओळखण री जुगत कराँ तो आ चौड़ै दीसै के विभिन्न धारामिक राजनैतिक अर सामाजिक परि-स्थितियाँ उणरो रूप-सरूप आप रे हाथां ठायो। दूजै सबदां में आ बात यूँ कथीज सकै के काव्य आप रै वगत रो उणियारो व्है। सरू में राजस्थान रो राजनैतिक जीवण अथिर हो। विभिन्न सूरदीर परिवार आप आपरा राज थापण सारू जूंझता अर होळे २ राजस्थान री आरवी साँस्कृतिक इकाई न्यारा रजवाड़ा रे निरमाँण री दिसाँ मे वधण लागी तो इण रो सीधो प्रभाव राज-स्थानी कविता में लाधै। ज्याँ रण रसिया जुझाँराँ री सूरवीरता साहस अर धीरज नैं राजस्थान रे इतिहास री कीरत माँ नैं उण रे लारै ई राजस्यानी रा कवियाँ री अमर वाणी गूंजै। वीर रस रे काव्याँ री वणगट में जिण भाँत रोस-जोस हूंस, उमग अर उछाह दीसै वो उण जुग रा समाज अर सत्ता रो सही प्रतिविम्ब है।

सूरापण, साहस अर मरण न्यूं हार धणै लाँबै काळ ताँई कविता रो खास जड़ाव रह्यो। उण जुग रा कवि कोरा कलम रा धणी ही नी हा पण तरवार रा धणी भी हा। वीरा-रस री झकोळ में जो कवियाँ रा वोल नीरसया उण रे पाछै नूंवा इतियास रा निरमाण हुयगा। वीर भावना अर उण खातर त्यागमरजाद री मरोड़ आप रे काळ पर वाँण ई कूं तीजै। इसी साँगो पाँग दीठ सूं कदीनी कवितावाँ री परख हो वणी चाहिजै।

धारो वदलियो, रूप वदलियो मरम वदलियो । अवार ताँई जकी कविता उद्-बोधन, रोस-जोस ललकार-फटकार री हुंकार रा डाका धुरावती वा अव समाज अर मिनखरे अंतस री भावनावाँ मे ऊडी अर अथाग उतरण लागी । सत्य-प्रकाश जोशी री 'हर' नाँव री कविता वम्बई जैड़ी महानगरी विचाले मुरधर रा मिनख री वीसरी सुध-बुध ने विरखा रा छाँटा रे सागै सोधण लागी । वम्बई नगर री कीड़ी नगरा ज्यूँ कल वलती भीड़ में कवि एकलो अनहाय सूनो ऊभो दीसै । कवि रे मन में गाँव री निरमळ निस्छल प्रकृति रा चित्राम एक एक कर आवै अर कवि रा भावाँ ने विलमावै इण रे सागै काव्य री तरगा मतै ही उमगण लागै । गजानन वरमा री कवितावाँ मे कुटुम-कवीला री मोह ममता रा दरसण हुवै । लोकगीताँ री मिठास भरी लाँठ मे वाँरी कवितावाँ नवी दिसा हे रै । कल्याणसिंह राजावत री नवी उक्तियाँ हिया में आणंद उम-गावै । । कन्हैयालाल सेठिया री रस भरी कविता मे राजस्थानी रे नवें जाग-रण री सहनाई रा सुर सुणीजै । चिड़ो कमेड़ी री कविता में दार्शनक भावाँ रा भला दरसण हुवै । 'पीजरो' इणी भाँत री कविता एक वानगी जाँ मे कवि चिड़कल्याँ ने संवोधन कर अचरज भरया पीजरा री अनन्तता री व्याख्या इण सवदा में करे-पाँरवाँ मरसी लाज, भुंवाली खा खा फिरती आस्यो चिड़-कल्याँ कठै ' क उड़ जास्यो ?

चन्द्रसिंह 'लू' अर 'वादली' रे मिस मरुधर रा लुभावणाँ चित्र कोरिया । राजस्थानी कविता में इण सूं पैली प्रकृति-चित्रण रा जो वरणन 'मलै उण सूं न्यारी भाँत री अन्तस री वाताँ 'वादली' मे मिलै । मुरधर री सूखी धरा आंख्याँ भर भर वादळी रा वारणा लेवै—

सोने सूरज ऊगियो,
दीठी वादलि याँह ।
मुरधर लेवे वारणा,
भर-भर आँखड़ि याह ।

नारायण सिंह भाटी री 'साँझ' प्रकृति री छिब अर कवि री झीणी कल्पना रा पाँख पसार राजस्थानी काव्य ने नई दिशा दिखाई। मिनखरे अंतस रा हरख-विसाद सुख-दुःख, राग-विराग रा झीणा भावाँ ने दरसावण ने साँझ में एक नवो आसरो मिल्यो। हिन्दी रे छायावादी कवियां री सैली रो प्रभाव इण में सहज ही निजर आवै। सांझ रो मानवीयकरण घणो लुभावणो लागै। 'सांझ' कवि रा अंतस मे रळ मिल एक मेक व्हैगी।

साँझ रो ओ चित्राम जोवो ।
लुकाती ढिवलो अंबर ओट,
निरखवा आई ओ संसार ।
धड़कती छाती धीमी चाल,
मुळकता नैणा सुरमो मार ।

इणरे आगै आज री नवीं कविता रो युग आरंभ हुवै आज जिणमे रा कवि आखर, मात्रा अर गणां ने गिण गिण परम्परा रे पँडे पड़ी कड़िया ने कविता नी मानै। आ री मान्यता है के कविता रो नीझर अंतम सूं आपे ई डाकै। मन रे सरळ संवेगाँ रो प्रवाह सारा बंधण तोड़ आपरा बेग सूं मते ई खळ कोजै। वा ही कविता हुवै। राजस्थानी मे नवे काव्य रो ओ आन्दोलन छंद री मरजाद ने तोड़ कविता री मरोड़ ई बदल दी। कविता रो ओ नवो सरूप अर उणियारो नवाँ जुगरी माँग है। इण स्वच्छन्द उडाण मे उत्पन्न मनोभाव अर संवेगाँ री प्रक्रिया ने नवी कल्पना अर नवे बिंब मे ढालणो ई कविता रो सहज सरूप वणतो जावै। राजस्थानी मे मणि मधुकर, गोरधन सिंह शेखावत अर तेजसिंह जोधा नवी कविता रा आगीवाँण वण ने साम्हाँ आया। मणि मधुकर री कविता "काळो घोड़ो" वरतमाँन जीवण री उण विसंगत अर विडम्बना काँनी आँगली उठावै जको भारी चहल पहल रे बीच निरासा अर रीस रा बीज बावै। कीड़ी नगरा रे उनमाँन कळवळता समाज री हाय तोबा रे माँय मिनख मिनख रो ओ आपसी निरमोही नातो घणो विडरूप लागै। गोरधन सिंह शेखावत री कविता "मुरझायोड़ो पळ" वरतमाँन जीवण रा थोथा तूंतड़ा उछाळै। आळस अर उदासी रो एक विचित्र चित्रण प्रस्तुत

करै । तेजसिंह जोधा री कविता "वठै ई थी [illegible] है" [illegible] अर तूटती गाँव री जूनी परम्परा अर मान्यतावां [illegible] है ।

बुद्धि प्रकाश पारीक राजस्थानी रा हास्य रस रा कवियां में अग्रणी है आपरी हास्य व्यंग री सरस रचनावां राजस्थानी रो गौरव [illegible] । 'मैं हूं बजार की लालटण' इणी भांत री एक व्यंग भरी रचना है । रघुराजसिंह हाडा जन कवियां री गणना में आवै । आपरा पांच घणमोला बाजणा 'घूघरा' छाँटर लीना । आ न्यारा न्यारा 'घूघरा' री घमरोळ घणी मीठी लागै ।

इण संकलन में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान रे निर्धारित पाठ्यक्रम ने ध्यान में राख कवितावां चुणी । पाठ रे आरंभ मे रचनाकार रो परिचय अर कविता रो मूळभाव अर पाठ रे अंत मे अभ्यास रा सवाल दीना है । पाठवार कठिन सबदां रा अरथ, टिप्पणी अर छंद–अलकार पोथी रे आखिर मे लिख दीना है ।

म्हे वां कवियां रा घणेमान आभारी हां जिण री रचनावां इण संकलन में लीनी ।

—कोमल कोठारी
—शार्दूल सिंह कविया

प्रगुणा श्री.

कविता-क्रम

कविता		कवि	पाना
१८	इण धरती कद मानी हार	रामनाथ व्यास 'परिकर'	८१
१९.	अरज	सत्य प्रकाश जोशी	८५
२०.	वजार की लालटैण	वुद्धि प्रकाश पारीक	९०
२१.	गाड्यां निकळी चीला रेग्या	कल्याण सिंह राजावत	९४
२२.	घूघरा	रघुराजसिंह हाडा	९६
२३.	कालो घोड़ो	मणि मधुकर	१०२
२४.	मुरझायोड़ो पल	गोरधनसिंह शेखावत	१०६
२५	कठै ई की व्हेगो है	तेजसिंह जोधा	१११

परिशिष्ट

१.	कठन सबदां रा अरथ अर टिप्पणी	११८
२.	छंद अर अलंकार	१३०

१. मीरांबाई

मीरांवाई रो जनम मेड़ता परगना रै गांव कुडकी में संवत् १५५५ रै लगभग हुयो। मीरांवाई मेड़ता रै राव दूदाजी री पोती ही अर मेवाड़ रै महाराणा सांगा रै पाटवी राजकंवर भोजराज ने परणायी ही। वाळापण सूं ई मीरावाई किसन भगवान री भगती करता। मीरांवाई री आव भगती रा घणा सोवणा भजन वणाया।

मीरांवाई री भगती रो महातम घणो पवित्र अर ऊंचो हो। लोक-लाज अर कुळ री मरजादा ने छिटकाय आराध्य देव गिरधर नागर रे आगे नाचता गाता अर भगती भाव दिखाता। मीरांवाई रो काव्य विरह-विजोग अर प्रेम भाव रो काव्य है। वे किसन भगवान ने सूता जागता पल पल उडीकै वाट जोवै, हिड़दा में ध्यावै। मीरांवाई रे काव्य रो ओ मोटो गुण है के वी में गहरी अनुभूति अर अन्तस री पीड़ा चौड़ै दीसै।

मीरांवाई रा भजन जिसा सरळ अर सुभट है उसाई झीणा अर मार-मिक है। इणी कारण मीरांवाई रा भजन जणो जणो गावै। अठै मीरांबाई रा पाच सरल भावपूर्ण भजन छांट,'र लीना है।

१. मीरां रा पद

(१)

करम की गति न्यारी संतो ! करम की गति न्यारी।
वडे वडे नैण दिये निरखण को, वन वन फिरत उघारी रे।
उज्जवल वरन दीनो वगलन को, कोयल कर दीनी कारी रे।
ओर नदियन जल निरमल कोनो, समुदर कर दीनो खारी रे।
मूरख को उत्तम राज दियत हो पडित फिरत भिखारी रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, राणोजी तो कोन विचारी रे॥

(२)

कोई कहियो रे प्रभु आवन की, आवन की मन भावन की।
आप न आवे लिख नहिं भेजे, बाण पड़ी ललचावन की।
ए दोई नेण कह्यो नहिं मानै, नदियां बहे जैसे सावन की।
कहा करूं कछु नहिं बस मेरो, पांख नहिं उड़ जावन की।
मीरां कहे प्रभु कब रे मिलोगे, चेरी भई हूं तेरे दावन की।

(३)

गोविन्द का गुण गास्यां।
राणोजी रूसेला तो गांव राखेला हरि रूठ्या कुमलास्यां।
राम नाम की जहाज बणास्या, भवसागर तिर जास्यां।
चरणाम्रत को नेम हमारो, नित उठि दरसण पास्यां।
विस रा प्याला राणोजी भेज्या, इमरत करि गटकास्यां।
यो संसार विनास जानिके, तावो संग छिटकास्यां।
लोक लाज कुळ काणिहु तजिके, निरभै निसाण घुरास्यां।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, चरण कमल वलि जास्यां।

(४)

जो तुम तोड़ो पिया मैं नहिं तोड़ूं।
तेरी प्रीति तोड़ि प्रभु कौन संग जोड़ूं।
तुम भये तरवर मैं भई पंखिया।
तुम भये सरवर मैं तेरी मछिया॥
तुम भये गिरवर मैं भई मोरा।
तुम भये चंदा मैं भई चकोरा॥
तुम भये मोती मै भई धागा।
तुम भये सोना भई मै सुहागा॥
बाई मीरां के प्रभु ब्रज के वासी।
तुम मेरे ठाकुर मै तेरी दासी॥

(५)

राणाजी करमां रो संगाती कुळ मे कोत नही।

एक तो माता रे दोय दोय डीकरा ज्यांकी न्यारी न्यारो भात।
वाकी न्यारी न्यारी करमां रेख।

एक तो राजाजी री गादी वैठिया दूजो हळ, र बैलं भरसी पेट।
एक तो माता रे दोय दोय डीकरी ज्यावी न्यारी न्यारी भांत,

ज्यांकी न्यारी न्यारी करमाँ रेख।

एक तो मोतियन माग भरावती दूजी घर घर दी पणिहार।

एक तो गऊ रे दो दो वाछड़ा ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
वाकी न्यारी न्यारी करमाँ रेख।

एक तो महादेवजी रे मंदिर नाँदियो दूजो वंणजारा रे हाथ ?
एक तो कुम्हार रे दोय दोय मटकियां ज्याकी न्यारी न्यारी भात,
ज्यांकी न्यारी न्यारी करमां रेख।

एक महादेव रे मंदिर जळ चढ़ै, दूजी मसाणां रे मांय।

राणाजी करमाँ रो संगाती जग में कोई नहीं।

—मीरांवाई

अभ्यास रा हवाल

१. वडे वडे नैण दिये निरखण को
वन वन फिरत उघारी रे।

इण पंक्ति मे किण रा भाग री वात कही ?

(क) मीरांवाई रे भाग री।

(ख) भीलणी रे भाग री।

(ग) हिरणी रे भाग री।

(घ) सीताजी रे भाग री।

(च) पतिव्रता रे भाग री।

२ वाई मीरां के प्रभु व्रज के वासी
तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी।
मीरा वाई व्रजराज री दासी वणणो चावै।
कारण :
(क) मीरावाई व्रजराज नै आपरो सरवस्व मानै।
(ख) मीरांवाई नै राणाजी घणा सतावै।
(ग) मीरांवाई नै जमनाजी री याद आवै।
(घ) मीरांवाई नै व्रजभोम चोखी लागै।
(च) मीरावाई रो मेवाड़ में मन नी लागै। ( )

३. विसरा प्याला राणोजी भेज्या इमरत करि गटकास्यां।
इण कथन मे मीरावाई रे किण मनोभाव री ठा पड़ै।
(क) नारी हट
(ख) अटल विस्वास
(ग) भक्तिभाव
(घ) वावळी रीस
(च) अपघात ( )

४. वांण पडी ललचावन की।
इण ओळी मे वांण सवद रो अरथ है।
(क) तीर
(ख) चीला
(ग) जेवड़ी
(घ) बासण
(च) आदत

५. एक तो मोतियन मांग भरावती,
दूजी घर-घर की पणिहार।
घर-घर पणिहार रो भावार्थ है :
(क) पराये घरां पाणी भरै।
(ख) पाणी मेल नै परोपकार करै।

(ग) पणिहारी रे सागै पाणी भरै।

(घ) मजूरी कर नै पेट पाळै।

(च) घर-घर मे पणिहार लगादे।

६. नीचै लिखी ओळियां में रेखांकित रो आसय स्पस्ट करो

(क) लोक लाज कुळ काणिहु तजिके,
निरभे निसांण घरास्यां।

(ख) एक तो महादेवजी रे मंदिर नांदियो
दूजो वाणजारा रे हाथ।

७. तुम भये चंदा भई मै चकोरा।

चाद अर चकोर रो कोइ सम्वन्ध है? ३० सवदां में उत्तर दो।

८. मीरांवाई आपरा नैणां नै सावण री नदियां री उपमा किण कारण सूं दी?

९. उज्जवल वरन दीनो बगलन को,
कोयल कर–दीनी कारी रे।

इण कथन सूं कांई भाव प्रगट व्है?

१०. मीरांवाई करमां की गति ने न्यारी क्यूं वताई?

११. 'वांकी न्यारी न्यारी करमां रेख'
इण पद में मीरांवाई न्यारी न्यारी करमां रेख रा कांई कांई उदाहरण दिया? इण मे कोई सा दो उदाहरण मांडो।

१२. मीरांवाई संसार रो संग क्यूं छिटकाणो चावै?

१३. मीरावाई रे काव्य रो मुख्य भाव कांई है?

२. दुरसा आढ़ा

दुरसा आढा रो जनम संवत १५९२ में जोधपुर जिले रै धूंदळै गांव में हुयो। दुरसाजी री काव्य प्रतिभा दिल्ली रो पातसा अकबर भली भत पिछांणतो। अकबर पातसा दुरसा जी रो खासो आदर करतो। वाँनै आपरै हाथाँ पसाव-पुरस्कार दिया। उदयपुर, जोधपुर बीकानेर अर सिरोही रे रजवाड़ा मे दुरसाजी रो घणो कुरब-कायदो हो।

दुरसाजी अपणै समै रा मानेता कवि हा। काव्य रचना री आपरी छह न्यारी-न्यारी पोथियाँ मिळै। जी में बिड़द-छिहत्तरी घणी नामी। बिड़द-छिहत्तरी मे महाराणा प्रताप री धीरता अर वीरता रो सोरठा छंद मे वरणन है।

प्रस्तुत संकलन बिड़द-छिहत्तरी री बानगी है। इण रचना में रांणा-प्रताप रा स्वाभिमान रो साचो चित्राम है। बिड़द-छिहत्तरी रो एक-एक सोरठो राजस्थानी साहित्य री मोटी धरोहर है। दुरसाजी री एक-एक उक्ति बाँचण वाळा रा हिया मे वीस रस री बोछाड़ करै।

२. रांणा प्रताप

अलख पुरुस आदेस, देस बचाय दयानिधे।
वरणन करूं विसेस, सुहृद नरेस प्रतापसी।१।
अकबर काना याद, हिन्दू नृप हाजर हुवा।
मेद पाट मरजाद, पग लागो न प्रतापसी।२।
चितवै चित चीतोड़, चिता जळाई सो चतुर।
मेवाड़ो जग मोड़, पावन पुरुस प्रतापसी।३।
कदे न नामै कंध, अकबर ढिग आवै न ओ।
सूरज वंस संबन्ध, पाळै राणा प्रताप सी।४।
अकबर पथर अनेक, कै भूपत भेळा किया।
हाथ न लागो हेक, पारस राण प्रतापसी।५।

सुख हित स्याळ समाज, हिन्दू अकबर बस हुवा ।
रोसीलो म्रगराज, पजै न राण प्रतापसी ।६।
अकबर समंद अथाह, तिह डूबा हिन्दू तुरक ।
मेवाड़ो तिण माँह, पोयण फूल प्रतापसी ।७।
अकबरिये इकवार, दागळ की सारी दुनी ।
अणदागल असवार, रहियो राण प्रतापसी ।८।
अकबर कनै अनेक, नम-नम नीसरिया नृपति ।
अनमी रहियो एक, पुहुमी राण प्रतापसी ।९।
थिर नृप हिंदूथान, लातरगा मग लोभ लग ।
माता भूमी मान पूजै राण प्रतापसी ।१०।
चांतै मरणो चाय, अकबर आधीनो बिना ।
पराधीन दुख पाय, पुनि जीवै न प्रतापसी ।११।
वधियो अकबर वैर, रसत गैर रोका रिपू ।
कदमूळ फळ करै, पावै राण प्रतापसी ।१२।
जिणरो जस जग माँहि, जिणरो जग धिन जावणो ।
लेणो अपजस नाँहि, पणधर धिनो प्रतापसी ।१३।
कवि प्रारथना कीन, पंडित हूं न प्रवीण पद ।
दुरसो आढ़ो दीन, प्रभु तुव सरण प्रतापसी ।१३।

—दूरसा आढा

अभ्यास रा सवाल

१. चातै मरणो चाय, अकबर आधीनो विना ।

राणा प्रताप अकबर री आधीनी स्वीकार करियाँ पहली मरण री अभिलाखा राखै । कारण :

(क) चेतक रे दाग लाग जावै ।

(ख) राँणाजी री पाग झुक जावै ।

(ग) सूरजअस रो अपमान हुय जावै।
(घ) पराधीनता में घणा दुख दीसै।
(च) राणाजी बदी बण जावै। ( )

२. मेवाड़ो तिण मांह, पोयण फूल प्रतापसी।
पोयणे फूल रो अरथ है :
(क) गुलाब रो फूल
(ख) गेंदा रो फूल
(ग) चंपा रो फूल
(घ) रोहीड़ा रो फूल
(च) कमल रो फूल ( )

३. सुख हित स्याळ समाज, हिन्दू अकबर बस हुआ।
रोसीळो म्रगराज, पजै न राण प्रतापसी।
उक्त सोरठा मे राणा प्रताप रा चरित्र री काई विसेसता प्रगट व्है ?
(क) उदारता।
(ख) सूरवीरता।
(ग) सहनसीलता।
(घ) दान वीरता।
(च) धीरता। ( )

४. कवि रे कथनानुसार इण जगत मे धन्य जीवन किण रो है ?
(क) जो संसार नै असार मानै।
(ख) जो ससार मे हिळमिळ, र चालै।
(ग) जिणरो जगत मे जस है।
(घ) जो जगत रो भलो चावै।
(च) जो दूजा रे आडो आवै। ( )

५. नीचे लिखी ओळिया मे रेखांकित रो आसय स्पस्ट करो।
(क) हाथ न लागो हेक, पारस राण प्रतापसी।
(ख) अकबरिये इकबार, दागळ की सोरी दुनी।

६. थिर नृप हिंदूथान, लातरगा मग लोभ लग ।

इण चरण में लातरगा सबद रो कांई अरथ है ? लातरगा सबद नैं अपणै वाक्य मे प्रयोग करो ।

७. 'अकबर पथर अनेक'

इस पंक्ति में कवि पथर किण नै बताया ?

८. अणदागल असवार, र हयो राण प्रतापसी ।

राणा प्रताप नैं अणदागल असवार क्यू बताओ ?

९. नीचै दिया सबदा रा दो दो पर्यायवाची सबद लिखो ।

समंद, पुहुमी, सूरज, म्रगराज, नरेस ।

१०. इण पाठ मे वैण सगाई अलंकार रा दो सोरठा छांटो ।

११. कवि राणा प्रताप नै अनेक उपमावां दी । इण मे दो उपमा लिखो ।

१२. विड़द छिहतरी री रचना रे आधार पर राणाप्रताप रा स्वाभिमान रा दो उदाहरण दो ।

१३. 'विड़द छिहत्तरी' कविता रो मूल भाव कांई है ?

३. ढोला-मारू रा दूहा

ढोला-मारू राजस्थानी रो प्रसिद्ध लोक-काव्य है। साहित्य रा इति-हास रा लिखारा इण काव्य रो रचना काळ सोळवीं सदी मे मानै। ढोला-मारू रो कवि अज्ञात है।

ढोला मारू री वात रो सार इण भांत है—ढोलो नळवर रो राज-कुंवर जी रो सगपण पूंगळ री राजकंवरी मारवणी रे सागै हुवो। दोनां री उमर साव छोटी ही। ढोलो इण वात ने विसरगो। वड़ो हुयो तो उण रो व्याव माळवे री राजकंवरी माळवण रे सागै कर दियो। मारवणी मोट्यार व्ही अर उण ने अपणे सनमन रो पतो पड़्यो तो वा ढोला ने संदेसो भेज्यो। मारवणी रा समचार मिळताई ढोलो करहा पर कूंची कस उण सूं मिळण री उमायो मारवणी रे देस पूगो। मारवणी ने सागै लेर ढोलो आपरे घर आयो।

संकलित अंस मे मारवणी रा रूप वरणन अर विरह वरणन रा दूहा है। प्रथम अस में दूत ढोला रे आगै मारवणी रो रूप बखाणै। दूजा अस मे मारवणी ढोला री याद में विरह रो ताव झेलै। चौमासा रो रुत में मारवणी ने ढोला री याद सतावै।

३. ढोला–मारू रा दूहा

मारवण रो रूप वरणन

गति गंगा मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ।
महिलां सरहर–मारवि, अवर न दूजी काइ॥
नमणी, खमणी, बहुगुणी, सुकोमळी जु सुकच्छ।
गोरी गगा-नीर ज्यूं, मन गरवी, तन अच्छ॥
रूप अनूपम मारवी, सुगुणी नमण सुचंग।
सा धण इण परि राखिजे जिम सिव मसतकं गंग॥
मारू घूंघ ट दिट्ठ मई, एता सहित फुणिंद।
कीर भमर कोकल कमळ, च मयँद गयँद॥

दत जसा दाड़म-कुळी, सीस फूल सिणगार ।
काने कुंडळ भळ हळइ, कंठ टकावळ हार ॥

मारवणी रो विरह वरणन

ऊनमयाँ उत्तर दिसा, गाज्यो गुहिर गभीर ।
मारवणी प्रिय सँमरच, नयणे वूठो नीर ॥
ऊनमि आई बादळी, ढोलो आयो चित्त ।
यो वरसै रितु आपणे, नयण हमारे नित्त ॥
ऊनमयो उत्तर दिसा, मेणी ऊपर मेह ।
ते विरहण किम जीवसे, ज्यॉरा देर सनेह ।
ऊनमियो उत्तर दिसा, काळी कँठळि मेह
हूं भे जूं घर आँगणै, पिउ भाजइ परदेह ॥
रात जु सारस कुरळिया, गुंजि रहे सब ताल ।
जणकी जोड़ बीछड़ी तिणका कवण हवाल ॥
बाबहिया नै विरहणे, दुहुवाँ एक सहाव ।
जब हो वरसै घन घणो तब हो कहे प्रियाव ॥
बाबहिया निल-पँखियाँ, वाढ़त दई दई लूण ।
प्रिउ मेरा म्है प्रीऊ को, तूं पिऊ कहेस कूण ॥
बाबहिया तूं चोर, थारी चाँच कटाविसूं ।
रातज दीन्हो लोर, म्है जाण्यो प्री आवियो ॥
सारसड़ी मोती चुणै, चुणै तो कुरलै काँइ ।
सगुण पियारा जो मिळै, मिळै तो विछुड़ै काँई॥
अकथ कहाँणी प्रेम की, किण सूं कही न जाइ ।
गूंगा का सपना भया, सुमर सुमर पिछताइ ॥
आडा डूँगर वन घणा. आडा घणा पळास ।
सो साजण किम वीसरे. वहू गुणतणा निवास ॥
हू वळिहारी सज्जणाँ. सज्जण मो वळिहार ।
हूं सज्जण पग पानहो. सज्जण मो गलहार ॥

४ ओपा आढ़ा

ओपाजी आढ़ा रो जनम सिरोही जिले रे पेसुवा गांव में हुवो । आप जोधपुर रे महाराजा विजैसिंह रा राज कवि हा । राज दरबार में आपरो घणो सनमान हो । आपरो रचना काळ सम्वत् १८४० सूं १८७५ तांई मांनी-जै । आपरै जनम मरण री तिथियां रो पूरो पतो नी लागो ।

ओपाजी भगती काव्य रा सिरै कवि हा । डिंगळ गीतां में आपरा काव्य री छटा अनूठी मिलै । डिंगळ गीत छंदां री एक इसी भांत है जकी दूजी किणी भासा री काव्य-परंपरा में नी मिळै । आ राजस्थानी री आपरी खास विसेसता है ।

प्रस्तुत सकलन में ओपा जी रा दो लोक प्रिय सरल गीत लीना । पहला गीत मे गणगौर रा दिनां मे 'घुड़ल्या' सूं उक्ति आरंभ हुवै अर मिनखा तन पर जार ढूकै । दूजा गीत में भारतीय तत्व मीमांसा रा आधार माथे मन ने आछी सीख मिलै । ओपा जी रे गीतां री कड़ी कड़ी मे धारमिक मन रो सरल सात्विक भाव पळकै ।

४: डिंगळ गीत

[१]

माटी रो ठाँम जोत तिण मांहि,
घण त्रिय फेरे घणा घरे ।
घुडल्यो के तक वार घूमसी,
फोडण वाळा लार फरै ॥
गौरी मिळै गीत सह गावै,
जतन रखावै जुवा जुवा ।
परू हमै किता घर फिरसा,
हेरू लोचपळोच हुवा ॥
अत जतनाँ माथे ऊपाड़ै
रंभा दोली थकी हरे ।

आस किसी राखीजे अेरी,
वैरी छोरा लार बहे ॥
ओ घट घुड़ल्यो जाण 'ओपला,
गोविन्द काय न गावै ।
खळ जम कयां उघाडै खांडै,
अतुर कीधां आवै ॥
मोटा पसण डाग ले मोटी,
काळ घड़ां नर फूटै ।
काचो कूँभ मिनखची काया,
फिरतां गिरतां फूटै ॥

(२)

मन जांणै चढ़ूँ हाथियां माथै,
खुर रगड़ंता जनम खुवै ।
नर री चीती वात हुवै नह,
हर री चीती वात हुवै ॥
मन जांणे पदमण हू माणूँ,
गोबँद बांधै पथर गळै ।
मांडण हारै लेख मांडिया,
मेटण वाळो कोण मिळै ॥
मन जांणै पहरूं महमूँदी,
फाटा धावळ लियां फिरै ।
कासूँ हुवै मिनख रो कीधो,
करै जको करतार करै ॥
मन जांणे पीऊँ पय मिसरी,
छाछ सोवनी मिळै न छांट ॥
चाळिया सो पाछा कुण वाळै,
उण घर री लेखण रा आंट ॥
दिल में जांणै पांव दबाऊँ,

ओरां रा पग दाबै आप ।
कळपै कमूं कमूं मन कांपै,
प्रांणी लेख तणो परताप ॥
चित में जाणै हुकम चलाऊं,
हुकम तणै वस नार न होय ।
साचा लेख लिख्या उण सांई,
काचा करण न दीसै कोय ॥
इम जांणै पकवांन अरोगूं,
धाप, र मिळै न लूखो धांन ।
आदम की विध करे 'ओपला',
भोला जे रचिया भगवांन ॥
धारे मन बैठूं धोळे-हर,
तापै सैना ढूंढ तठै ।
मोटा आखर कवण मेटवै,
कुटी लिखी सो महल कठै ॥

ओपाजो आढ़ा

अभ्यास रा सवाल

१. आस किसी राखी जै अेरी, वैरो छोरा लार वहै ।
घुड़ल्या रे लारे लारे छोरा चालै । कारण :
(क) घुडल्या री संभाळ राखै ।
(ख) घुडल्या रा मीठा गीत सुणै ।
(ग) घुडल्या नै फोड़गो चावै ।
(घ) घुड़ल्या रो अजब अजब तमासो देखै ।
(च) घुडल्या रो दिवलो निरखै । [ ]
१ मन जाणे पदमण हू मॉणू
गोवद बॉधै पथर गळै ।
इण दूहे मे पथर रौ तात्पर्य है :

(क) कुमांणसनार
(ख) कपूत वेटो
(ग) मोटी सिला
(घ) कुलखणोभाई
(च) कळहगारी पाड़ौसण ( )

३. मोटा पिसण डांग ले मोटी
इण पंक्ति में मोटा पिसण रो अभिप्राय है ।
(क) वैरो
(ख) छोरा
(ग) खांडो
(घ) काळ
(च) गवाल्यो ( )

४. "वारै मन वैठू धोळहर" ।
मिनख री किण मनोवृति रो परिचायक है ?
(क) सुख
(ख) संतोष
(ग) धीरज
(घ) स्वारथ
(च) लालच ( )

५. फेरू हमैं किता घर फिरसो,
हेरू लोचपलोच हुवा ।
अठै लोचपलोच रो अरथ है ।
(क) सामा आवै ।
(ख) पाछा वावडै ।
(ग) घूमर घालै ।
(घ) घेरो देवै ।
(च) चरणां में लोटै । ( )

६. नीचै लिखी झडाँ मे रेखाँकित रो आशय स्पष्ट करो।

(क) काचो कुंभ मिनख ची काया फिरता गिरतां फूटै।

(ख) मोटा आखर कवण मेटवै
कुटी लिखी सो महल कठै।

७. नीचै दिया सबदां रा हिन्दी पर्याय लिखो।
जतन, डाग, मिनख, आखर, हेरू।

८. नीचै दिया सबदा रा विलोम सबद लिखो।
साचा, काचा, घणा, फाटा, लूखो।

९. इण गीतां में वैण सगाई अलंकार री दो आलियां छांटर लिखो।

१०. कवि काया नै काचा कुंभ री उपमा कांई सोचर दी?
५० सबदां में उत्तर दो।

११. ओपाजी मिनखातन सूं घुड़ल्ये री तुलना किण रूप में कीधी?

१२. घुड़ल्या री कथा माथै संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

१३. डिगळ गीत अर लोकगीतां मे कांई अन्तर है?

५. बांकीदास आसिया

बांकीदास आसिया रो जनम पंचमदरा परगना में भांडियावास गांव में हुवो। सरूपोत री भणाई जोधपुर में हुई। बांकीदास री गणना राजस्थानी रा प्रसिद्ध कवियां में की जावै। आप जोधपुर नरेस मानसिंह रा राज कवि हा दरबार में आपरी घणी धाक ही। जोधपुर नरेस आपनै लाख पसाव दियो अर 'कविराजा' री उपाधि सूं विभूषित किया।

बांकीदास आसिया री लिखी छोटी मोटी इगताळीस पोथियां मिलै। 'बांकीदास ग्रन्थावली' रा नाम सूं आपकी रचनावां प्रकाशित हुई। वीर रस, श्रृंगार रस अर नीति सम्बन्धी दूहा आपरा सिरै काव्य है। डिंगल गीत आपरा बेजोड़ है।

प्रस्तुत संकलन में बांकीदास रो एक प्रसिद्ध गीत लीनो जिण में कवि विदेसी शासन रे विरुद्ध राजावां ने चेताया अर हिन्दू-मुसळमान री मेळप पर बळ दियो। उण समै रजवाड़ां में अंगरेजां रे हाथा राज सूंपण री होड माचगी ही। राजावां री आ करतूत बांकीदास रे हिये अणूंती साल्ही। इण डिंगल गीत में वाही कसक मिलै।

५. गीत

आयो इगरेज मुलक रे ऊपर, आंहस लीधा खैंचि उरा।
धाणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभा गई धरा।
फौजां देख न कीधी फौजाँ, दोयण किया न खळाडळां।
खवां खाँच चूड़ै खाँवदरै, उणहिज चूड़ै गई यळा।
छत्र पतिया लागी नह छाणत, गढ़पतियां धर परी गुमी।
बळ नह कियो बापड़ा बोतां, जोताँ जोताँ गई जमी।
दुव चत्रमास वादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस।
पूगो नही चाकरी पकड़ी, दीधो नही मड़ैठो देस।

वजियो भलो भरतपुरवाळो, गाजै गजर धजर नभ गोम ।
पहलां सिर साहबरो पड़ियो, भड़ ऊभै नह दीधी भोम ।
महिजाता चीचातां महिळा, अै दुय मरण तणां अवसांण ।
राखो रे किंहिक रजपूती, मरद हिंदू की मुस्सळमाण ।
पुर जोधाॅण, उदेपुर जैपुर, पहु थांरा खूटा परियाॅण ।
आंकै गई आवसी आंकै, वाॅकै आसल किया वखाण ।

—वाॅकीदास आसिया

अभ्यास रा प्रश्न

१. "धणियाँ ऊभाँ गई धरा" मे कवि नै राजावाँ मे कांई कुलखण दसै ?

(क) लालच
(ख) कायरता
(ग) स्वारथ
(घ) आळस
(च) द्रोह ( )

२. राखोरे किंहिक रजपूती, मरद हिन्दू की मुस्सलमाण ।
इण झड़ मे रजपूती सूं तात्पर्य है ।

(क) वीरता
(ख) चातुरी
(ग) देसभक्ति
(घ) स्वामीत्व
(च) सहणशीलता ( )

३. पहिलां सिर साहब रौ पड़ियो,
झड़ ऊभै नंह दीधी भौम ।
इण झड़ मैं भड़ रा चरित्र री कांई विशेषता प्रगट हुवै ?
(क) त्याग

(ख) स्वाभिमान

(ग) दातार

(घ) सहणशलता

(च) धीरज ( )

४. वल नह कियो वापड़ा वोतां
जोता जोतां गई जमी।

इण कथन रे लारे वि रो मनोभाव है।

(क) बिनोद

(ख) सन्तोप

(ग) खीज

(घ) अचरज

(च) व्यग ( )

५. गढ पतियां धर परी गमी में
धर परी गमी रो कांई तात्पर्य है ?

३. बाकीदास जी गढ़ पतियां नै बापड़ा बोता क्यूं बताया ?
५० सबदां में उत्तर दो।

७. वै दो औसर किसा है जद मरद नै मरमिटणो चाहिजै ?

८. इण रो आशय स्पष्ट करो।

(क) धनियां मरे न दीघी धरती।

(ख) पहिलो सिर साहब रो पड़ियो।

९. नीचै लिखी गीत री झड़ां रो भावार्थ लिखो।

(क) खवां खांच चूड़ै खांवदरे,
ऊणहिज कूड़ै गई यळां।

(ख) वळ नह कियो बापड़ा बोता,
जोतां जोतां गई जमी।

१०. इण गीत में वैण सगाई अलंकार रा चार उदाहरण छांटो ।

११. इण गीत में कवि राजावां री किण दुरदशा रो वरणन करै ?

१२. 'वजियो भलो भरतपुर वाळो ।''
भरतपुर रा घेरा री वात वताओ ।

१३. वांकीदास जी रो ओ गीत लिखण रो काई अभिप्राय है ?

६– सूरजमल मीसण

सूरजमल मीसण रो जनम संवत १८७२ में बूंदी मे हुयो । वांरा पिता चन्डीदानजी पिगळ अर डिगळ का आछा कवि हा । सूरजमल आपरा पिता कनै काव्य कला रासारा लच्छण सीख्या । सूरजमल मीसण संस्कृत प्राकृत अर डिंगळ रा प्रकांड विद्वान हा । राजस्थानी रा सर्व श्रेष्ट कवियां में सूरजमल मीसण री गणना हुवै ।

वंश-भास्कर अर वीर सतसई आपरा दो प्रसिद्ध ग्रन्थ है । वंश-भास्कर इतिहास ग्रन्थ है । वीर सतसई एक लोक प्रिय वीर काव्य है । वीर सतसई मुक्तक काव्य री परम्परा मे एक श्रेष्ट रचना है ।

प्रस्तुत संकलन वीर सतसई रा दूहा मां सूं लियो गयो है। सन् १८५७ मे अँगरेजा रे विरुद्ध जको राष्ट्रीय विद्रोह हुयो सूरजमल मीसण उणा विद्रोह रा सिरै कवि हा । वै आपरी ओज भरी वाणी सूं वीरां ने चेताया । वीर-सतसई मे वै ही उद्‌गार है । इण मे दूहा जिला छोटा छन्द मे वीर-भाव हिलोळा मारै है । वीर सतसइ उगणीसवी सदी रो [illegible]

६. वीर सतसई रा दूहा

सतसई दोहामयी, मीसण सूरजमाळ ।
जंये भड़खाजी जठै, सुणै कायरां साल ॥१॥

इकडंकी गिण एक री, भूले कुळ सांभाव ।
सूराँ आळस ऐस मे, अकज गुमाई आव ॥२॥

आज घरे सासू कहे, हरक अचाणक काय ।
वहू बळेवा हूलसै, पूत मरेवा जाय ॥३॥

मूझ अचंभो हे सखी, कंत बखाणू कीस ।
विण माथै दळ वाढ़ियो, आँख हिये कै सीस ॥४॥

नायण आज न माँड पग, काल सुणीजे जंग ।
धाराँ लागीजे धणी, तो दीजे घण रंग ॥५॥

कंत भलाँ घर आविया, पहिरीजे मो बेस ।
अब धण लाजी चूड़ियाँ, भव दूजे भेटेस ॥६॥

दरजण लवी अंगियाँ, आँणीजे अब मूझ ।
तव टोटे मोनू दया, दूण सिवाई तूझ ॥७॥

मणिहारी जा री सखी, अब न हवेली आव ।
पीव मुवा घर आविया, विधवाँ किसा बणाव ॥८॥

घोड़ा चढ़णो सीखिया, भाभी किसड़ै काम ।
बंब सुणीजे मार को, लीजे हाथ लगाम ॥९॥

पूत महादुख पाळियो, वय खोवण धण पाय ।
एम न जाण्यो आवसी जामण दूध लजाय ॥१०॥

भोळा की डर भागियो, अंत न पहुंड़ै एण ।
बीजी दीठाँ कुळ वहू, नीचा करसी नैण ॥११॥

जिम जिम कायर थरहरे, तिम तिम फैलै नूर ।
जिम जिम बगतर ऊवड़ै, तिम तिम फूलै सूर ॥१२॥

टोटै सरकां भीतड़ा, घाते ऊपर धाम ।
वारीजे भड़ झूंपड़ा, अधपतियां आवाम ॥१३॥

नहँ पडोस कायर नरां, हेली वास सुहाय ।
बलिहारी जिण देसड़े, माथा मोल विकाय ॥१४॥

पोता रे बेटा थिया, घर मे वधियो जळ ।
अब तो छोड़ो भागणो, कंत लुभायो काळ ॥१५॥

इळा न देणी आपणी, हालरियां हुलराय ।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय ॥१६॥

—सूरजमल मीसण

अभ्यास रा प्रश्न

१. धारां लागां जे धणी, तो दीजे घण रंग ।
उक्त चरण मे धारा लागीगे रो अरथ है ।
(क) जळ धारा मे बहणो ।
(ख) लहरां मे रमणो ।
(ग) धार रे आरपार उतरणो ।
(घ) धारां मे बसणो ।
(च) रण में काम आणो । ( )

२. कंत भला घर आविया पहरीजै मो वेस ।
इण उक्ति मे वीर नारी रे मन रो भाव प्रगटै ।
(क) रीस
(ख) त्याग

(ग) पछतावो

(घ) डर ( )

(च) संतोष

२. नहं पड़ोस कायर नराँ. हेलो वास सुहाय ।

इण चरण में हेली रो अरथ है ।

जिम जिम कायर थरहरे, तिम तिम फैलै नूर ।
जिम जिम वगतर ऊवडै, तिम तिम फूलै सूर ॥१२॥

टोंटै सरकां भीतडा, घातै ऊपर घाम ।
वारीजे भड़ झूंपडा, अथपतियां आवास ॥१३॥

नहँ पड़ोस कायर नरा, हेली वास सुहाय ।
वलिहारी जिण देसड़ै, माथा मोल विकाय ॥१४॥

पोतां रे बेटा थियां, घर मे वधियो जळ ।
अव तो छोडो भागणो, कंत लुभायो काळ ॥१५॥

इळा न देणी आपणी, हालरियां हुलराय ।
पूत सिखावै पालणै, मरण वड़ाई माय ॥१६॥

—सूरजमल मीसण

अभ्यास रा प्रश्न

१. धारां लागं जे धणी तो दीजे घण रंग ।
उक्त चरण मे धारा लागीगे रो अरथ है ।
(क) जळ धारा मे बहणो ।
(ख) लहरा मे रमणो ।
(ग) धार रे आरपार उतरणो ।
(घ) धारां में धसणो ।
(च) रण में काम आणो । ( )

२. कंत भला घर आविया पहरीजै मो वेस ।
इण उक्ति मे वीर नारी रे मन रो भाव प्रगटै ।
(क) रीस
(ख) त्याग

७. लोक गीत

राजस्थान में लोक गीतां रो घणो प्रचार। देसरी लोक संस्कृति री पावन धारा लोक गीतां मे देखण ने मिलै। लोक गीत किणी एक कवि री रचना नही। अै तो जन वाणी रो एक मुखरित रूप है।

पारिवारिक अर सामाजिक जीवन मे लोक गीता रो घणो महत्व। आणै टाणै अर परव उछव रा न्यारा २ गीत गई जै। राजस्थान में चौमासा रा गीत, तीजां रा गीत, होली गणगोर रा गीत गांव गाँव मे गाया जावै। पारवारिक जीवन मे जापा, जड़ूला, सगाई ब्याव र मायरा रा भात-भांत रा गीत गई जै। जिण मे कई गीत तो इसा आखियात हुवा वै सारा राजस्थान में गाया जावै/हालरियो, पीपळी, पीळो, घूघरी, ओल्यूं, बधावो अर वीरो इण गीता री पांत मे अग्रणी।

प्रस्तुत संकलन मे तीन घणां प्रचलित गीत छाँटर लिया। 'रेणादे' एक रूड़ी काव्यात्मक कल्पना है। 'सपनो' वधावा रा गीताँ री गणना मे आवै। 'वीरो' मायरा री अजळी परम्परा रो प्रतीक है।

लोकगीत

(१)

रेणादे

धोळा धोळा काँई करो अे, धोळा वन में कपास
धोळो सूरज जी रो घोड़लो अे, धोळा बहू रेणादे रा दाँत
उगतो उजास वरणो, आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ ए चरण चाली, पंछीड़ा मारग चाल्या
नेम-धरम सब साथ।

सहेल्यां, बावल घर बाज्या ढोल
सहेल्यां, सुसरैंजी घर आणंद-उछाव ।
रातो रातो काँई करो अे, राती मुड्ने री मजीठ
रातो सूरजजी रो घोड़लो अे, राता वहू रेणादे रा नैण
उगतो उजास वरणो, आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ ए चरण चाली, पंछीड़ा मारग चाल्या
नेम-धरम सब साथ ।
सहेल्यां, बावल घर बाज्या ढोल
सहेल्यां, सुसरैंजी घर आणंद-उछाव ।
काळो काळो काँई करो अे, काळा वन रा काग
काळो सूरजजी रो घोड़लो अे, काळा वहू रेणादे रा केस
उगतो उजास वरणो, आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ ए चरण चाली, पंछीरा मारग चाल्या
नेम-धरम सब साथ ।
सहेल्या, बावल घर बाज्या ढोल
सहेल्यां, सुसरैंजी घर आणद-उछाव ।
पीळो पीळो काँई करो अे, पीळी चणा केरी ढाळ
पीळो सूरजजी रो घोड़लो अे, पीळो वहु रेणादे रो चीर
उगतो उजास वरणो. आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ ए चरण चाली. पंछीरा मारग चाल्या
नेम-धरम सब साथ ।
सहेल्यां. बावल घर बाज्या. ढोल
सहेल्यां. सुसरैंजी घर आणद-उछावै ।
हरयो हरियो काँई करो अे हरी अे वन. मे तो दूब
हरियो सूरजजी रो घोड़लो अे हरी वहु रेणादे री कूख
उगतो उजास वरणो. आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ ए चरण चाली. पंछीड़ा मारग चाल्या

नेम-धरम सब साथ।

सहेल्याँ. बावल घर बाज्या ढोल

सहेल्यां. सुसरैजी घर आणंद-उछाल।

[२]

सपनो

सुणो. ओ भंवर म्हाँने सपनो सो आयो जी राज.
सपनै रो अरथ बतावो जी राज।
कहो. अे गोरी थाँने किण विध आयो जी राज.
सपनै रो अरथ बतावाँ जी राज।
हंस-सरोवर ढोला गाजत देख्यो जी राज.
मान-सरोवर जळ भर्‌यो राज।
बाँगाँ माँयला चंपला म्हे फलत देख्या जी राज.
फुलड़ा बीणै दोय कामणी राज।
पोळा माँयला हसता म्हे घूमत देख्या जी राज.
हरो हरा दूब घोड़ा चरै राज।
आँगणियाँ रो चोक म्हे पूरत देख्यो जी राज.
ऊपर कूंभ कळस भर्‌यो राज।
महलाँ माँयलो म्हे जगतो देख्यो जी राज.
दिवला री जोत सुहायो राज।
हस-सरोवर गोरी पीर थाँरो जी राज.
मान-सरोवर थारो सासरो राज।
बाँगा माँयला चंपला वै वीर थाँरा जी राज.
फुलड़ा बीणै थाँरी भावजाँ राज।
पोलाँ माँयला हसती वै जेठ थाँरा जी राज.
हरी-हरो दूब सुवासणो राज।

आँगणियाँ रो चोक वो कंवर थांरो जी राज,
कुंभ-कळस थांरी कुळवहू राज ।
महलां मांयलो दिवलो वो कंत थारो जी राज,
दिवला री जोत सायवणी राज ।
धन-धन, जी वसेदेव जी रा छावा जी राज,
सपना रो अरथ भलो दियो राज ।
धन-धन, अे साजनियाँ री जायी जी राज
सपना रो अरथ भलो लियो राज ।

(२)

वीरो

वीरा अेक वड़लो दूजो पीपलो
ज्यांरा पान सवाया होय,
माँ री जाई सूं क्यांको रूसणो ।
वीरा अेक कूवो दूजी वावड़ी
ज्यांरा नीर सवाया होय
जाँमण जाई सूं क्यांको रूसणो ।
वीरा अेक पोळो दूजी चूंदड़ी
ज्यारां रंग सवाया होय,
जाँमण जाई सूं क्यांको रूसणो ।
वीरा एक गऊ दूजो वाछड़ो
ज्यांरा दूध सवाया होय,
माँ री जाई सू क्यांको रूसणो ।
अेक वीरो दूजी वैन व्है
ज्यांका हेत सवाया होय
माँ री जाई सू क्यांको रूसणा ।

वीरा पाँच भायाँ री आ वैन छै
वा पगाँ ऊवाँणी जाय
जामंण जाई सू क्याँको रूसणो ।
वीरा अेक वीरा री वैन छै
रथड़ा में वैठी वैठी जाय
जामंण जाई सूं क्याँको रूसणो ।

—सकलित

अभ्यास रा प्रश्न

१. हरियो सूरज जी रो घोड़लो अे,
हरी बहू रेणादे री कूख ।
हरी वहु रेणादे री कूख रो आशय है :
(क) रैणादे हरी भरी लागै ।
(ख) रैणादे सपूती नार है ।
(ग) रैणादे हरी आँगी धारण करै ।
(घ) रैणादे हरा पल्ला रो चूदड़ी ओढै ।
(च) रैणादे री कूख में हरो दुपट्टो सोवै । ( )

२ सपने रो अरथ बतावो जी राज ।
इण कथन में राज सबद किण रे वास्तै प्रयुक्त हुवो ?
(क) पति
(ख) देवर
(ग) जंवाई
(घ) राजा
(च) कारीगर ( )

३. हरी-हरी दूव सुवासणी राज ।
सुवासणी किण रे वास्तै प्रयुक्त हुयो ?
(क) सखी सहेलां
(ख) कुळ वहू
(ग) वहन वेटी
(घ) दिवराणी जेठाणी
(च) आड़ौसण पाड़ौसण ( )

४. 'जामण जाई सूं क्या को रूसणो ।'
लोकगीत मे आ वात कुण कही ?
(क) मा
(ख) वाप
(ग) भाई
(घ) व'हण
(च) सहेली ( )

५. नीचे लिखी ओलियां रो आशय स्पष्ट करो :
(क) सहेल्यां वावल घर वाज्या ढोल ।
(ख) दिवला री जोत सायवणी राज ।
(ग) जामण जाई सूं क्या को रूसणों ।

६. नीचै दिया सवदा रा हिन्दी रूप लिखो :
वावल, धोळा, राता, वाछड़ा, दिवलो ।

७. लोकगीत में रैणादे रा दांत, नैण, अर चीर रो रंग किसोक वतायो ?

८. गौरी नै सपनां मे सरोवर अर वागां मे काई निजारो निजर आयो ?

९. भाई वहण नै चूंदडी किण ओसर पर औढावै ?

१०. राजस्थान मे 'वीरो' गीत किण ओसर पर गायो जावै ?

११. लोक जीवण मे लोक गीता रो काई महत्व है ?

८. राजस्थानी रा दूहा

राजस्थानी मे सबसो घणो साहित्य दूहा-सोरठा में मिलै। राजस्थान रा ठेठ गाँवा में मिनखाँरी जबान पर राजस्थानी रा जूनां दूहा-सोरठा सुणन ने मिलै। किणी दूहा-सोरठा रे लारे कवि री छाप है तो घण करा दूहा रा लखारो रो अतो पतोई कोनीं। पण अै दूहा समाज रा हिया रा हार है।

कैई कवि आपरे सेवक री सेवा चाकरी पर रीझ वानै दूहा रै मिस जग जाहिर कर दिया। राजिया रा दूहा इणी परम्परा मे आवै।

राजस्थानी री बातां में दूहा सोरठा रो समावेश मिलै। इसो दूहा घणां च वा हुआ। घणकरा दूहा में नीति, उपदेश, वीररस श्रृंगार, प्रेम, विरह-विजोग, भूंडा भला री पिघाण री झीणी वातां मिलै।

प्रस्तुत संकलन में इसाही सरल दूहा रो संग्रह है जो वालोपयोगी साहित्य री कोटि मे आवै।

८. राजस्थानी रा दूहा

वड़ा वडाई ना करै वडा न वोलै वोल ।
हीरा मुख सूं ना कहे, लाख हमारा मोल ॥१॥
तरवर सरवर संतजन, चोथो वरसण मेह ।
परमारथ रे कारणै, च्यारां धारी देह ॥२॥
हंसा, सरवर ना तजो, जे जळ खारो होय ।
डाबर-डाबर डोलतां, भला न कहसी कोय ॥३॥
डूंगर जळतो लाय, जोवै सारो ही जगत ।
प्रा ळती निज प.य, रतो न सूझै राजिया ॥४॥
मुख ऊपर मीठास, घट माँही खोटा घड़ै ।
इस ड़ां सूं इखळास, राखो जे नह राजियां ॥५॥

साँपड़ झैराँवै सेढा रे सारू ।
वेरे बेढाकर हेरे हथहारू ।
भैंस्याँ रिड़कै रिड़ गाया रँभावै ।
प्राणी तिरपातुर पाँणी कुण पावै ॥३॥
खाल खेळो में बाजै खणणाटा ।
भाजै धाफड़ले कोटा भणणाटा ।
वारै वेरा रे धन दे बणणाटा ।
गाँजर खाँचैदे पाँचर गणणाटा ॥४॥
न चा नैणा सूं धोवाँ जळ धावै ।
ऊचो ईखण रो अभलेखो आवै ।
गाढी गयणाँगण रज ले गरणाँटा ।
सावण सूकोगो देतो सरणाता ॥५॥
फुरियो भादरवो घुरियो नह फीको ।
न रद रज आगै आलै नह नीको ।
ति सया संगारा भूपर नर तिरसै ।
बिसिया अगारा ऊपर सूं वरसै ॥६॥
बाळक वरळावै आखाँ अभिलाखै ।
भूभू बूबू बिन भाखा नहि भाखै ।
सूंपै सीरावण व्याळू ले बाँसै ।
वेळा व्याळू री सीरावण साँसै ॥७॥
ढाँढा ताँभाडै केरड़िया ढीकै ।
रोटी पाँणी नै टीगरिया रीकै ।
महळा मुरधर री तरसै अन ताँई ।
तीजै पोराँ तक बीजै दिन ताँई ॥८॥
सरधा बाँकी सूं झाँकी सुखसेरी ।
ढूंढ़ो ढूंढ़ाहड़ झाडोती हेरी ।

जाँणी जीवण नै जिण तिण मिस जुळिया ।
पाणी पीवण नै पूरव दस पुळिया ॥९॥
जाडा धन वाला सिंधू तट जुड़िया ।
गाडा तन पाळा गुज्जरधर गुड़िया ।
घर घर छपनै में घर घर री घाली ।
मोऊ मुरधर री सन मुख सुख माल्ही ॥१०॥
बलदां गांडासल पाडाँ पर बोरा ।
छोटा डोरान्तर रोराँकुर छोरा ।
करणॉ दरसावै केटा बरकड़ियाँ ।
जूती फाटोड़ी वाँधी जेवड़ियाँ ॥११॥
फाटा धावळिया घाघरिया फाटा ।
फरकै चोटलियाँ देती फरराटा ।
तागत तूटोड़ी तापड तूटोड़ा ।
खाता पीता सूं पेलाँ खूटोड़ा ॥१२॥
सासा नोली में अटकाया साँसे ।
बाळक झोली मे लटकार्या वाँसे ।
माथै ओड़ी धर सारवीणाँ माडै ।
छपनै लाखीणाँ घर ऊपणॉ छाडै ॥१३॥

—अमरदान लाळस

अभ्यास रा सवाल

१. महळा मुरधर री तरसै अन ताँई ।
तींजै पोराँ तक वाजै दिन ताई ।
कविरा उक्त कथन सूं आपरै मन मे काँई भाव जागै ?
(क) संतोष
(ख) क्रोध

५. रेखांकित रो आशय स्पस्ट करो ।

(क) मुख ऊपर मीठास घट माही खोटा घड़ै ।

(ख) धारा में धसतांह आंसू आवै ईलिया ।

६. नीचै लिखी ओळियाँ रो अरथ बताओ ।

(क) सीख सरीरां ऊपजे दिवी न आवै सीख ।

(ख) टोलो सूं टळतांह हिरण मन माठा हुवै ।

७. नीचै दिया सबदाँ रा विलोम रूप लिखो ।

करडावण, उतावळा, माठा, ओछो

८. पंडित ओर मसालची दोऊं उलटी रीत ।

कवि पंडत अर मसालची री उलटी रीत काँई बताई ?

९. परमारथ रे कारणे च्यारां धारी देह ।

अै चार कुण कुण है ? आरां नांव बताओ ।

१०. कवि अगन अर जळ नै जबर विरोधी क्यूं बताया ?

११. उण दोय चीजां नै गिणवो ज्यो फाटयां पाछै नहीं मिलै ।

१. ऊमरदान लालस

ऊमरदान लाळस रो जनम फलोदी तहसील रे ढाढरवाले गाँव में सवंत् १९०८ में हुयो । बाळपण में शिक्षा वाँरे पिता रे हाथाँ हुई पछै जोधपुर रा एक राम दुवारा में आसण आ जमायो । उणो विचाळै वाँने रिसी दयानंद फटकार लागा । वै पक्का आर्यसमाजी वणग्या ।

ऊमरदान लाळस री गणना जन कवियाँ में की जाणी चाहिजै । कवि सामंती परम्परा ने छोड़र सामान्य जनता पर कविता लिखी । लाळस एक सुधारवादी कवि हा । धरम रे नाँव पर प्रचलित झूंठ पाखंड, अन्ध विश्वास पर कवि आकरा प्रहार किया । समाज सुधार रो संख नाद सुणायो ।

प्रस्तुत संकलन छपना रा छंद रो चुणो हुयो अंश है । छपनो देस माथै एक भूंडो काळ पड़्या । मरुधरा हाल उठी । कवि इण काळ रो बड़ो सशक्त वरणन करै । इणी रो एक करुण चित्राम इण पाठ में लयो है ।

९. छपना रा छंद

काळी पीळी सह सींळी ककुभाळी ।
काँठळ कावळती वादळ वळ वाळै ।
अचल उलटाती कुलटाकृति आवै ।
खै खै करतोड़ी मरतोड़ा खीवै ॥१॥
वायू आयू हर विवरण वहरावै ।
थरथर थरकत थिर थिर चर थहरावै ।
खेहाडंबर खर अवर अरड़ावै ।
धरणी तल धणै गरदव गरड़ावै ॥२॥

(ग) घ्रणां
(घ) करुणां
(च) उदासी ( )

२. गाजर खाचै ले पाँचर गणणाटा ।
वेरा माँ मूं पाचर गणणाटा देती आवै । कारण –
(क) वेरा में पाणी निठगो ।
(ख) वेरो ऊडो वेठगो ।
(ग) पाणी का बोझ सूं चड़स फाटगो ।
(घ) लाव री लड़ तूटगी ।
(च) कीलियो ऊंतावलो वेवे । ( )

३. वारै वेरा रै धन दे वणणाटा ।
उक्त चरण मे धन सवद रो अरथ है ।
(क) माया
(ख) सांसर
(ग) पत्नी
(घ) सखी सहेली
(च) पणिहारा ( )

४. भूभू वूवू विन भाखा नहिं भाखैं ।
नान्हा टाबर भूभू वूवू किण चीज नैं पुकारै ।
(क) माखण
(ख) दूध
(ग) छाछ
(घ) रोटी
(च) पाणी (

५. नीचै लिखी ओलियां में रेखांकित रो आसय स्पस्ट करो ।
(क) अंचल उलटाती कुलटाक्रति आवै ।

(ख) खेहा डंवर खर अंवर अरडावै ।

(ग) प्राणी तिरखातुर पाँणी कुण पावै ।

६. नीचै 'दया पदां रो अरथ लिखो ।

(क) नीचा नैणा सूं धोवा जळ धावै ।
ऊंचो ईखण रो अभलेखो आवै ।

(ख) माथै ओडी धर साखीणां मरडे ।
छपनै लाखीणां अपणां घर छाडे ।

७. नीचै दिया पशुआ रे नाँव आगे उपयुक्त सवद सोध र मांडो ।
(रिड़कै, गरड़ावै, अरड़ावै, रभावै)

गाया —

भैस्यां —

गरधव —

ऊँट —

८. छपना रा छंदा में वैग मगाई रा दो उदाहरण छांटो ।

९. नीचै दिया सवदा रा हिन्दी रूप लिखो ।
गयण, जाडा, मोऊ, ढ़ाँढा, केरडिया टीगरिया ।

१०. इण सवदां रा विलोम रूप लिखो ।
फीको, सूको, पाळा, वाँको ।

११. "वारे वेरारे धन दे वणणाटा ।" वेरा रेवारे सांसर वणणाटा देना क्यूँ डोलै ।

१२. छपनै रे काळ री आंधा रो कवि किण रूप मे वरणन करै ?

१३. छपनै रे काळ में मुरधर रे मिनखां री कांई दशा हुयगी । १०० सवदा मे उत्तर दो ।

१०. नाथूसिंह महियारिया

नाथूसिंह महियारिया उदयपुर रा वासी हा। वै आधुनिक काल में राजस्थानी री जूनी परम्परा नै कायम राखी। आपरी 'वीर सतसई' वीर रसात्मक दूहा री एक आधुनिक रचना है जकी जूना राजस्थान रा वीर भाव री याद दिरावै।

प्रस्तुत संकलन कवि री नवी रचना 'बापू' सूं लीनो है। नाथूसिंह महियारिया महातमा गाँधी सूं प्रभावित व्है उण पर काव्य रचना करी। इण दूहा में गांधी जी री महानता अर वांकी देस भक्ति पर कवि री अनूठी उक्तियां मिलै। दूहा जिसा छोटा छद में कवि आछा चित्राम कोरया है। इण मे कई दुहा तो घणा प्रसिद्ध हुयगा है। बापू नी तो कदेई हाथ मे तरवार झाली नी रीठ बजायो न रगत बहायो तो ई वो नवै जमाना रो सबसूं लूंठो सूरमो हो। इण दूहा मे कवि नवै सूरमै री नवी वीरता रो विड़द बखांणियो।

१०. गाँधी

नैणां निरभागी हुवा, दरसण विण तरसंत।
मम रसणा वड़भागणी, गाँधी-सतक रचंत ॥१॥
फौजां रोकी फिरंगरी, तोकी नह तरवार।
गाँधी तैं लीधो गजब, भारत रो भुजभार ॥२॥
आतम बळ सो बळ नही. आतम बळ अदभूत।
जै जरमन सूं जीतिया, हारया गाँधी हूत ॥३॥
लाखाँ घण लोहां हुवा, जिण हथणापुर काज।
गांधी लोह न भीटियो, लियो दली सूराज ॥४॥

खग नह लेतो हाथ में, सेल न लेतो पास ।
गाँधी अनसन लेवतो, लेतो फिरंग निवास ॥५॥

गोरा हंदी गोरियां, कहे म्हारो वड भाग ।
पिव जीवत घर आवियाँ, गाँधी दियो सुहाग ॥६॥

इण दहु कुळ रो हित कियो किया सुतंतर सत्थ ।
मंदिर और मजीत रो, इक गाँधी मूरत ॥७॥

अंगरेजाँ रा राज मे, अस्त न हो तो भाण ।
अस्त किया जानै अठै गाँधी करूँ बखाण ॥८॥

महल गढाँ जकड़ी रखी, जुगाँ जुगाँ रे वाद ।
गाँधी तै कीधी गजब. आजादी आजाद ॥९॥

केताँ धन प्रिय धाम प्रिय धर प्रिय किताँ विसेस ।
पण गांधी प्रिय देस रो, गाँधी ने प्रिय देस ॥१०॥

सरब मनां स्वारथ बसै. मानव जात सुभाव ।
परमारथ वसतो मनां. रे गाँधो फिर आव ॥११॥

देवां समंदर मत्थयों. थाक गया मथ मत्थ ।
भारत ने विण सम मिल्यो. तू गाधी अमरत्थं ॥१२॥

जे रावण होतो नही. नह हो तो फिरंगाँण ।
राम-कथा गाँधी-कथा. कुण सुणता दुनियाँण ॥१३॥

—नाथूसिह महियारिया

अभ्यास रा सवाल

इण दहुं कुळ रो हित कियो. किया सुतंतर सत्थ ।
इण पंक्ति मे दहुं कुळ सूं तात्पर्य है ।
(क) हिन्दू अर मुसलमान ।
(ख) हिन्दुस्तानी अर अंगरेज ।

(ग) गाँधी और फिरंगी ।
(घ) जरमन अर अंगरेज ।
(च) देवता अर मिनख । [ ]

२. गाँधी अनसन लेवतो लेतो फिरंग निसास

निसासा लेण रो अरथ है ।

(क) लाम्बी साँस लेणो ।
(ख) ढब ढब र सांस लेणो ।
(ग) सासा रोक लेणो ।
(घ) दुःख री सास लेणो ।
(च) निरासा मे जीवणो । [ ]

३. गोरा हदी गोरियाँ कहै म्हारो बड भाग ।

गोराँ री गोरियाँ आपरो वडो भाग मानै । कारण—

(क) गोरा घणो वीरता दिखाई ।
(ख) गोरा रा राज मे सूरज नी आँथै ।
(ग) गोरा जरमन नै हराय दियो ।
(घ) पति जीवता घरे आयगा ।
(च) गाँधी गोरा रो तरवार सू सामनो नी कियो । [ ]

४. 'गाँधी लोह न भीटयो ।'

इण चरण मे लोह भीटणै रो तात्पर्य है ।

(क) लोहा रै हाथ लगाणो ।
(ख) लोह नै हाथ में लेणो ।
(ग) लोह रो कवच धारण करणो ।
(घ) लोह रो टोप ओढ़णो ।
(च) ससतर धारण करणो । [ ]

५ इण कविता में प्रयुक्त छंद रो नाम है।

(क) दूहा

(ख) सोरठा

(ग) छप्पय

(घ) गीत

(च) कुंडलया [ ]

६. रेखांकित रो आसय स्पस्ट करो।

क गाँधी तैं कीधी गजब आजादी आजाद।

(ख) देवाँ समंदर मन्थियो थाक गया मथ हत्थ।

७. नैणाँ निरभागी हुआ दरसण विण तरसंत।

कवि नैणाँ नै निरभागी क्यूं बताया ?

८. नीचै दिया सबदाँ रा हिन्दी पर्याय लिखो—

आतम, हथणापुर, सुहाग सूरत, माँण।

९. कवि आतम बळ नै अदभुत क्यूं मानै ?

१०. कवि गाँधी नै पाछो क्यूं बुलाणो चावै ?

११ गाँधी कथा री तुलना राम-कथा सूं किण कारण सूं करै ?

१२. गाँधी भारत रो भार किण भाँत उठायो ?

१३. गाँधी सतक रा दूहाँ रो मुख्य भाव काँई है ?

११. गणेसीलाल व्यास 'उस्ताद'

गणेसीलाल व्यास 'उस्ताद' रो जनम स्थान जोधपुर हो : आप आरंभ मे ही जन जागरण रे वास्ते कलम उठायी। गणेसी लाल 'उस्ताद' रो ओ अटळ विस्वास हो के कविता जन चेतना अर जन-जागरण सारू एक अचूक हथियार है। आरवी अमर इणी दीठ सूँ वै कविता लिखी।

गणेसीलाल एक सुधारवादी अर क्राँति दर्शी कवि हा। वै अन्याय अर शोपण रे विरुद्ध जिया जत जनता मे प्राण फूँकता 'रह्या।

इण संकलन मे वाँरी दो रचनावाँ 'जुगवाँणी' आर 'हेत चाहिजै' लीनी है। 'जुगवाणी' मे कवि जनता री वाणी रो प्रतीक वणगो है। जुगवांणी जन जीवन में आपरो कोई प्रभाव राखै कवि इण रो चोखो चित्राम माँडयो है। देस मे फैली फूट अर विषमता रे माथै कवि हेत चाईजै में करारो प्रहार करै। देस रा करण धारा नै सांव सूधो मारग बतावै।

११. जुगवांणी

आ जन कवि री जुगवाँणी. आ कदेन चुप रह जांणी.
कोई लाख जतन कर हारे. आ समझे सांच सुणाणी।
कोई मार कूट धमकाई. धन-कुरव-धाम ललचाई.
सै जुग रा जुल्मी खपग्या. इण करी नही सुणवाई.
आखड़िया सो आंथडिया इण माथै घूँस जमाणी।
जन जन रे पग वेड़ी ही. जनता गाडर जैड़ी ही.
राजा रो जोर जमाँवण' अँगरेज फौज नेड़ी ही.
जद वठै ढवी जरवांसू. अब किणरे हाथ दवाणी।
जद गोरी हुकुमत अड़ती. सड़काँ पर गोल्याँ झड़ती.
जेलाँ मे चौखट चढ़िया. मौराँ री खाल उघड़ती.

पण जै स्वराज घुर्राता, नरसिंघ जुत्योड़ा धाँणी।
आ चोट लग्यां चमकै है, निरणाँ पेटा दमकै है,
फाटा जामाँ में रण रा, झंडा गिणती धमकै है,
इण रा धण-टावर जाणै, विपदा माथै मुसकाणा।
आ भूला समझा लेला, ऊजड़ खड़ता पालैला,
पूठै इग घड़ी अगाड़ै, हाली हालै, हालैला,
जुग-जुग इण री भावी है, सिल गाँणी फेर वणाणी।
गायक इक दिन मिट जास, पण अैड़ा गीत वणासी,
जन-जन रे कंठा रमसो, पीढ़ी दर पीढी जासी,
आ काया तो कवि रीं है, पण जनता री जुगवाँणी।

हेत चाईजै

जन-जन रे मन हेत चाईजै

जुग साथे संकट री वेळा, सगला सुभट सचेत चाईजै,
जिण जनता में फूट-फजीता, खुली किवाड़्या, लोग नचीता,
तक मिलता उण घर में वड़सी लूक, सियाल्या, गडक चीता,
जन-वळ मे ळय वजर कटै, पर तन बळ तेज सचेत चाहिजै।
धरम-ढंग रा खुल्या खलीता, जात पात राजग्या पलीता,
जुग जीवण रो लाय लगाता, पनप रया जन लोही पीता,
फूट समदरी भंवरा तरवा, जन-मन मेळप सेत चाहिजै।
लिख्या लेख सूं लोक भुगत है, पण जीवन जंजाल जुगत है,
नवा राव ने नवा रावळा, कुण जाणै जन री हुकमत है
काम करे वाँरी रचना मे, करी बात रो बेत चाहिजै।
ऐक चरे चौरासी पसै, उण घर समता किण विध दीसै,
जन रा पीड़क करे नखारा, जन रा भीड़ू मुड़दा घीसै,
धाड़वियाँ रे धूड़ माजनै, न्हाँखण मूठी रेत चाईजै।

नेता, हाकम, ने इधकारी, हळधर कळधर जनता सारी,
एक मना पुरसारथ कर ने, मुलक करे केसर री क्यारी,
भुज मैणत रा सीरी उपजै, ग्गरो कमायो खेत चाईजै ।

धर खैंचण दुसमण सीवाड़ै, दो चीता दोनूं दिस दहाड़ै,
एक मनो जाग्यां जन जीवण, एक भिड़ै इक्कीस पछाड़ै,
वजरवळी भारत रे रथ रा, सुगळा तुरंग कुमेत चाहिजै ।

रजथांनी, कस्मीर, वगाली, पंजाबो उड़या मलियाली,
करणाटक गुजरात मराठा, केरब उत्तराखंड रा हाली,
वां में भुज मैणत मेळर री, नव जीवण री नेत चाईजै ।

—गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद

अभ्यास रा प्रश्न

१. जुग जुग इगरी भावी है, सिलगांणी फेर वणाणी ।
इण ओली मे जुगवाणो रो काम दरसायो है ।
(क) साव सार्चा वात कहणो ।
(ख) मेटणो अर मांडणो ।
(ग) जुलमा रो धको सहणो ।
(घ) विपदा रे माथै मुसकाणो ।
(च) लाय लगार तमासो देखणो । ( )

२ पण 'जै स्वाराज' कुरांता नरसिंघ जुत्थोड़ा घाणी ।
अठै नरसिंघ रो तात्पर्य है ।
(क) वीर सिवा जी
(ख) राणाप्रताप
(ग) गुरु तेगवहादुर

(घ) वीर देश भक्त

(च) जन साधारण ( )

३. 'खरो कमायो खेत चाहिजै' कमायोड़ा खेत रो अरथ है।

(क) वा जोतर सुधारयोड़ो खेत।

(ख) सूड़ करयोड़ो खेत।

(ग) हळ चलायोड़ो खेत।

(घ) निनाण काटयोड़ो खेत।

(च) इूंचणी करयोड़ो खेत। ( )

४. "अेक चरै चोरासी पीसै" समाज री किण समस्या रो प्रतीक है?

(क) नेता अर जनता

(ख) पूंजीपति अर मजदूर

(ग) जमीदार अर करसो

(घ) हळधर अर कळधर

(च) राजा अर प्रजा ( )

५. घर खैचण दुसमण सी वाड़ँ,
दो चीता दोनूं दिस दहाड़ँ।
कवि दो चीता कुण नैं बताया है?

६. इणरा विलोम सबद लिखो।
नेड़ो, उधेड़णो, अगाड़ी, सिलगाणी, हेत, खरो।

७. नीचै दिया सबदां रा हिन्दी पर्याय लिखो।
गाडर, जरखा, गाभा, नेड़ी, धाड़वी, भीड़्, सीरी।

८. नीचै लिखिया मुहावरां रो अरथ बताओ।

खाल उधेड़णो, लोही पीणो, खंखरा करणा, मुडदा. घीसणां, मांजना में धूळ नाखणो।

देस नै केसर री क्यारी बणाणो ।

९. नीचै लिखी ओलियां रो अरथ बताओ।

(क) जद जन रे पग वेडी ही
जनता गाडर जैड़ी ही।

ख) बजरवळी भारत रे रथ रा सगळा तुरंग कुमेत चाईजै।

१०. कवि 'जुगवाणी' नै अडर अर अजय किण भांत बताई ?

११. नवा राव नै नवा रावळा सूं आप कांई समझो ?

१२. 'हेत चाहिजै' कविता सूं आपनै कांई प्रेरणा मिलै ?

१३. 'हेत चाहिजै कविता रो अंतस रो भाव कांई है ?
५० सबदा मे लिखो।

१२. कन्हैयालाल सेठिया

कन्हैयालाल सेठिया रो जनम सुजाणगढ़ जिला चुरू में हुयो। आप दस वरस री छोटी ऊमर में ही कविता लिखण लागगा। आपरी हिन्दी कविता वां री अनेक पोथियां छपी। राजस्थानी में मीझर नांव रो कविता संग्रह अर 'गलगचिया' नांव रा गद्य-गीत घणां लोक प्रिय हुवा। 'पातळ अर पीथल' आपरी प्रथम लोक प्रिय रचना है, जिकी घणी मुखरित हुई।

कन्हैयालाल सेठिया रो प्रकृति-चित्रण अर मरुधर रा ग्रामीण जीवण रो चित्रण आपरी न्यारी ही छटा छिटकावै। सूवटो, अड़वो अर कालवेलियो आदि कवितावां में इण धरा रा रंग पळकै।

इण संकलन मे आपरी दो रचना 'बापू' अर पींजरो लीनी है। 'बापू' रा निधन पर लिखी आ रचना एक लोक-प्रिय मरसियो बणगो। इण रचना मे मदरी मंदरी वेदना झळकै। पीजरो चीड़ी कमेड़ी री कविता नी हैं आ तो एक दार्शनिक भाव सूं परिपूर्ण ऊंचा स्तर री कविता है। इण रचना में भावनांवा री ऊंची उड़ाण है।

१२. बापू

आभे में उड़ता खग थमग्या
गेले में वैता पग थमग्या
हाको सो फूट्यो धरती पर,
वै कुण गमग्या, वै कुण गमग्या ?
ओ मिनख मर्‌यो के मप्यो पांखी
सै साथे नाड़ कियां नांखी ?
वा सिर कूटे है हिंदुवांणी
वा झुर झुर रोवे तर कांणी,

इसड़ो कुण सजन सनेही हो
सगळा रा हिवड़ा डगमगग्या।
वै कुण गमग्या, वै कुण गमग्या ?
मिनखां रो रुळग्यो मिनख पणो
देवा री मिटगी सकळाई
बापूजी सुरग सिधार गया,
होणी रे आडी के आई ?
जीवूंला सौ'र पचीस वरस
विसवास दिरा'र किया छळगया ?
गिगनार पड़ैलो अब नीचै
सतवादी वचना सूं डिगग्या।
वै कुण गमग्या, वै कुण गमग्या ?
बापू सा मिनखा देही मे
धरती पर मिनख नही आया,
आगै री पीढ़या पूछैली—
के इस्या नखतरी जग जाया ?
ई एक जोत रे पलकै सूं
इतियास सदा ने जगमगग्या,
ई एक मौत रे मौके पर
सगलां रा आंसू रळ मिळग्या।
वै कुण गमग्या, वै कुण गमग्या ?

पींजरो

चिड़कल्यां कठै'क उड़ उड़ जास्यो ?
धरती ऊपर गगण मड्योड़ो
बंद पींजरो ढब रो,
बिना बारणै थां ने वाड़ी

चो कारीगर जबरो,
पांखां मरसी लाज, मुंवाली-
खा खा फिरती आस्यो।
चिड़कल्यां कठै'क उड़ उड़ जास्यो ?
ई इचरज सूं भर्‌ये पीजरे-
मांय पीजरा कँई—
थां रे जी रो बणी पींजरो-
थां रे निज री देहीं,
ओ तो गोरखघंधो ई सूं
पार मुसकल्यां पास्यो,
चिड़कल्यां कठै'क उड़ उड़ जास्यो ?
इस्ये पीजंरे रो कारीगर
दया धरम सैं छोड्या,
जीव पखेरू मौत मिनकड़ी
दोन्यूं सागै रोड्या,
भख भक्षक ने कर्‌या एकठा-
मांड्यो अजब तमासो।
चिड़कल्यां कठै'क उड़ उड़ जास्यो ?

— कन्हैयालाल सेठिया

अभ्यास रा सवाल

१- कवि रे कथनानुसार सतवादी वचनां सूं डिग जावै तो कांई हुवै ?
(क) देस में हा को फूट जावै।
(ख) आकास नीचै आ पड़ै।
(ग) मिनख रो मिनख पणों रुळ जावै
(घ) देवा री सकळाई मिट जावै।
(च) सूरज आं थूणो उग आवै। ( )

२. "इतिहास सदा नैं जगमगगा" ।

अठै इतिहास जगमगगा रो तात्परय है ।

(क) नवा इतिहास लिखी जगा ।
(ख) इतिहास अमर हुयगा ।
(ग) इतिहास पर नवो प्रकास पड़गो ।
(घ) पुराणा इतिहास फीका पड़गा ।
(च) इतिहास मे नवो जागरण आयगो । ( )

३. "सैं साथैं नाड़ किया नाखी ।"
नाड़ नाखण रो आसय है ।

(क) घांटी नीची करणो ।
(ख) नाड़ गोडा मे देणो ।
(ग) घणो दुःख हुवणो ।
(घ) लचखाणो पडगो ।
(च) मूंडो नी दिखाणो ।

४. ईं अचरज स्यूं भर्‍ये पीजरे मांय पींजरा कँई ।
इण कथन में कवि मांय पीजरा कँई किण नैं गिणाया ?

(क) मिनखा तन नैं ।
(ख) पंछीरा पीजरा नैं ।
(ग) संसार रा गोरखधंधा नैं ।
(घ आकाश अर धरती नैं ।
(च) जगत रा माया जाळ नैं । ( )

५. नीचैं लिखी ओळिया रो भावारथ बताओ ।

(क) सगळा रा हिवड़ा डगमगगा ।
(ख) सतवादी वचना सूं डिगग्या ।

६. कवि महातमा गांधी नै नखतरी मिनख बताया।
नखतरी मिनख रो कांई अरथ है ?

७. महातमा गांधी नै हिन्दु वाणी अर तुरकांणी दो न्यूं क्यूं झूरै।

८. पींजरो कविता में कवि चिड़कल्यां नै कांई बात पूछै ?

९. ई' संसार नै कवि अजब तमासो क्यूं बताओ ?

१०. जीव पंखेरू मोत मिन कड़ी दो न्यूं सागै रोब्या।
इण पद में प्रयुक्त अलंकार बताओ।
(उपमा, मयक, रूपक, अन्योक्ति)

११. नीचै दिया सबदां रा हिन्दी पर्याय लिखो।
गिगनार, सगळा, एकठा, पळको, मिनकी, नाड़।

१२. नीचै लिखी ओलियां रो अरथ समझांवो :
(क) पांखां मरसी लाज भुवाली खा खा फिरती आस्यो।
(ख) जीव पंखेरू मौत मिन कड़ी दो न्यूं सागै रोब्या।

१३. गांधी री मौत रे दिन देस री कांई दसा हुई।
१०० सबदां में लिखो।

१३. मेघराज मुकुल

मेघराज मुकुल रो जनम सन् १९२३ में राजगढ़ चुरू में हुयो। आप एम० ए० ताई शिक्षा पायी। मेघराज मुकुल आधुनिक राजस्थानी रा पैला कवि है जका आपरे सुरीले कंठ सूं मायड भासा रो मिसरी-सूं मीठो स्वाद जण जण नै चखायो। कवि-सम्मेलना रे मंच सूं आपरे सुरीला गळा नूं इसो रंग जमाता क श्रोता झूमता झूमता मस्त हुइ जाता। आपरी 'सैनाणी' नाव री राजस्थानी कविता देस रा कूणां कूणां में आपरो प्रभाव जमायो। राजस्थानी भासा रो इसो देस व्यापी प्रचार दूजो कोई कवि नी कर पांयो। मुकुल जी इण जोत रा एकळा जगमगाता रतन नीसर्‌या।

'सैनाणी' अर 'किरत्या' आंपरी राजस्थानी रचनावां रा संग्रह प्रकासित हुवा। इण संकलन में आपरी कविता 'सूरज रे माथै सिन्दूर' किरत्यां में सूं लीं गई है। इण कविता में नवां युग री नवी मानता री जोत जगमगावै। कवि री बाणी करसां र का मेतरां ने चितावै।

१३. सूरज रे माथै सिन्दूर

बरसै चारूं कूंट चानणो,
अंधकार ने आवै लाज।
जिको बूकियां पांण कमावै,
वो धरती पर करसी राज।
धरा धरम ने छोड़ै कोनी,
शोसण पर तो पड़सी गाज।
जिको वहासी खूंन पसीनो,
वो ही अब तो करसी राज।
आग उकाळै सीळो पाणी,
भक भक करती निकळै भाप,

विजळी फाटै मेघ माळिये
उमस्यां धरती बढ़सी ताप ।
लियां मूंगळी फूंक न चूल्हो,
आंधी आप जगावै आग ।
इसी घड़ी में दम दम करती,
लपट सजावै जुग रो भाग ।
हळ रै सागै आस ऊभरै
निकमो छोलै छाती आप ।
अम नद प'ठ थपथपावै तो,
ढीलै मुंह पर पड़ज्या थाप ।
बात बात में बात नीसरी,
वणगी लंबी-चौड़ी बात ।
बात वणायां सरसी कोनी,
अजे मोकळी ऊंघे रात ।
जिकै हाथ में हंसियो-कसियो,
वो हो हाथ वाण्यो मजबूत ।
जिकै हाथ में जेळी खुरपी,
वो जी वैलो सावळ सूत ।
जिकै पगां में रुळी गरेवी,
वै पग हुया पांगला आज ।
झिकै पगां सूं माटी लिपटी,
वै पग वण्या गरीब-निवाज
वीज उघाड़ै मूंदी पलकां,
कूंपळ न्हावै झिरमिर मेह ।
नाज नी पजै खेतड़लां में,
दम-दम दमकै उजळी देह ।

हिळमल वावै, हिळमल काटै,
हिळमल रैवै करसो आज ।

जगमग खेती, झिळमिळ खेती,
खिळण मिळण री उमर दराज ।

जुग हुंकारै शंख वजावै,
झालर सी झणकै झणकार ।

जणै-जणै कै हिवड़ै वसग्यो,
मिनख पणे में भीज्यो प्यार ।

ले पसवाड़ो अब मत सो रै,
जाग जाग किरसाण मजूर ।

रात बीतगी अरे देख अब,
सूरज रे माथै सिंदूर ।

इण बेळा में ले अंगड़ाई,
जगती जोत धरा पर देख ।

डूंगर बळती घणी देखली,
पगाँ बळीं ने झुक-झुक देख ।

चूको मत किरसाण मजूरी,
मुलक पसीनो मांगै आज ।

धरा-धरम ने जिको राखसी,
अब तो वो ही करसी राज ।

—मेघराज मुकुल

अभ्यास रा सवाल

१. कवि रै कथानानुसार अब धरती पर राज करसी।

(क) नेता

(ख) श्रमजीवी

(ग) देस भक्त

(घ) देस रा जवान

(च) देस रा किसान ( )

२. कवि 'सूरज रे माथे सिंदूर' कविता में किण नैं जगाया है ?

(क) राजा महाराजा नैं।

(ख) नेता अर हाकिम नैं।

(ग) किसाण अर मंजूर नैं।

(घ) किसाण अर जवान नैं।

(च) गरीब अर अमीर नैं। ( )

३. वरसै चाँल्ह कूट चाँनणो, अंधकार नैं आवै लाज। इण पंक्ति में चांनणै री आसय है

(१) चांद री चांनणो।

(२) सूरज री प्रकास।

(३) दिवलै री जोत।

(४) आग री लपटां।

(५) नव जागरण री चेतना।

४. किसाणां अर मजूरा कनाँ आज देस कांई मांगै ?

(क) मिनखा चार

(ख) अन्न जळ

(ग) बलिदान

(घ) लोही

(च) पसीनो ( )

५. इण ओलियाँ रो आशय स्पष्ट करो।

(क) जिकै पगाँ में रुळी गरीबी
वै पग हुआ पांगळा आज।

(ख) जणै जणै कै हिव्ड़ै वसग्यो
मिनख पणै में भीज्यो प्यार।

६. नीचै दिया मुहावराँ रो अरथ लिखो।
पीठ थपथमाणो, छाती छोलणो, अंगड़ाई लेणो, जोत जगाणो, गाज गिरणी थाप मारणी।

७. नीचै दिया सबदां रा हिन्दी पर्याय लिखो।
चांनणो, करसो, डूंगर, मोकळी, निकमो मिनख पणो।

८. हंसिये कसिये रा हाथाँ नै कवि मजबूत क्यूं बताया?

९. कवि धरती पर जगती जोत किण नै बताई?

१०. रात वीतगी अरे देख अब
सूरज रे माथै सिन्दूर।
इण चरण में 'रात वीतगी' रो काँई तात्पर्य है?

११- करसण में सहयोग रो महत्व किण ओलियाँ में दरसायो गयो?

१२. कवि किसाण-मजूर नै किण भाँत जगाणो चावै?

१३. समाज रै नव सृजन री बात कवि किण रूप मे बखाणी।

१४. रेंवतदान चारण 'कलिपत'

रेवतदान चारण कल्पित रो जनम गाँव मथणिया जोधपुर में संवत् १६८१ में हुयो। रेवतदान चारण री गणना उण कवयाँ में करी जावै है जिणरी वाँणी मे भावाभिव्यक्ति री भागीरथी हिलोरा मारै। कवि रो एक एक आखर युगान्तर री जगमगाती चिणगारी रो काम करै।

आपरी भासा सरल अर शब्द-चयन अनूठी है। आप गाँवां में घूम-घूम ने आपरी जोसीली कविता सूं करसा ने चेताया। चेत 'माँनखा' मे आपरी बैंड़ी ई जोसीली कवितावाँ रो सग्रह है।

इण संकलन में आपरी दो कविता लीनी है—चेत माँनखा अर इंकलाव री आँधी। पहली कविता में कवि माँटी रे मिस करसाँ में चेतना जगावै। दूबी कविता साच्याँ ही इकलाव री आँधी है जकी धुवाँधार धंव धंव करती आती दीखै। इण अनूठी आँधी रा अजव प्राभव रा चित्राम कवि री कलम सूत्र प्रगट किया।

१४. चेतमांनखा

खेत खड़ण ने हळ ले हाली.
जद करसाँ री टोळी;
कितरा दिन तक सवर करेला;
माटी हंसने बोली;
रे वंदा चेत मानखां चेत, जमानो चेतण रो आयो।
इण मांटी में सौ-सौ पीढ़ी. मरगी भूखी प्यासीं;
भाग भरोसै रह्यो वावळा. प्रींत करीं आकासीं;
कदे तो पड़ग्यो काळ आभागो. गिण गिण काट्यो दोरो;

कदे तो ठाकर लाटो लाटयो, कदे लाटग्यो वीरो;
कदे तो वैरी दावो पड़ग्यो, कदे आयगी रोळी;
कितरा दिन तक सबर करैला, मांटी हंसने बोलो;
रे बंदा चेत मांनखा चेत.
जमानो चेतण रो आयो ।
मांग्यां खेत मिळै नी करसा, मोल चुकाणो पड़सी;
मोत्यां मूंगी इस धरती रो, कोल निभाणो पड़सी;
सांमी छाती जे कोई आयो, जोर जताणो पड़सी;
खेत खड़तां हळ जे रोक्यो, हाथ कटाणा पड़सी;
लोई बिना रंग नीं आवै, धरती पड़गी धोळी;
कितरा दिन तक सबर करैला, माटी हंसने बोली
रे बंदा चेत मांनखा चेत.
जमानो चेतण रो आयो ।

इंकलाब री आंधी

अंधार घोर आंधी प्रचंड
आ धुंवाधोर धंव-धंव करती
आवं है उर मे आग लियां, गढ़ कोटां बंगलां ने ढहती ।
बेताल बतूळो नाचै है, जिण रे आगे संदेस लियां
राती ने काळो पीळी आ, कुण जांणे कितरा भेख कियां
वै संख बजै सरणाटा रा, कोई गीत मरण रागां वै है
डकै री चोट करै भीतां, बायरियो ढोल बजावै है
विकराळ भवांनी रमै झूम, धरती सूं अंबर तक चढ़ती
अंधार घोर आंधी प्रचंड; आ धुवांधोर धंव-धंव करती
आवै है उर मे आग लियां
गढ़ कोटां बंगलां ने ढहती ।

नींवां रे नीचै दवियोड़ी, जुग-जुग री माटी दे झपटो
ले उड़ी किलाँ ने जड़ा मूळ, पसवाड़ो फेर कियो पलटो
तिणके ज्यूं उड़गी तरवाँरा, घोचे रो रूप कियो भालाँ
रूंखाँ रे पतां ज्यूं उड़गा, वे लाज बचावण री ढालां
बापड़ी उखरड़ी में बोतल, मद मीसण रा प्याला उड़ग्या
मैफिल रा उड़ग्या ठाट-बाद, महलाँ रा रख वाळा उड़ग्या
वै देख जुगाँ रा सिंघासण, रड़ वड़ता पड़िया ठोकर में
वै देख हजाराँ मुकट आज, उड़तोड़ा दीसै अम्बर में
यै ऊँधा लटकै अधर बम्ब, नहिं झेलै अम्बर ने धरती
अंधार घोर आँधी प्रचंड, आ धुंवाधोर धंव-धंव करती

आवै है उर में आग लियाँ
गढ़ कोटां बंगलाँ ने ढहतो ।

आँधी आ अजब अनूठी है. डूंगर उडाया सिल उडी नहीं
सिमरथ वे उड़ग्या रंग-महल, हळ की झूंपड़िया उड़ी नहीं
उड़ गयो नवलखो हार देख. मिणियाँ री माळा पड़ी अठै
उड़ गई चूड़ियाँ सोने री, लाखां रो चुड़लो उड़ै कठै
उड़ गया रे समी गदरा वे, राली रे रंज नहीं लागी
ला फिरै कामेतण लड़ाझूम, लखपतणी मरणी लड़खड़ाती

आवै है उर में आग लियां
गढ़ कोटाँ बंगलां ने ढहती ।

अंधकार मत जांण बावळा, इंकलाब री छाया है
इण भाग बदलिया लाखाँ रा, कई राजा रंक बणाया है
रे आ वा काळी रात जकी, पूनम रो चांद हसावै है
रे आ वा बाळी मौत जकी, मुगती रो पंथ बतावै है
रे आ वा भोळीं हंसी जकी, के मरती वेळा आवै है

इण घुंवाधार रे आँचळ में, इक जोत जगै है जगमगती
अंधार घोर आँधी प्रचंड, आ घुंवाधार धव धव करती
आवै है उर में आग लियाँ
गढ़ कोटां बंगलाँ ने ढहती ।

— रेवतदान चारण 'कल्पित'

अभ्यास रा सवाल

१. भाग भरोसे रह्यो वावळा
प्रीत करी आकासी ।
अठै प्रीत करी आकासी रो तात्पर्य है ।
(क) भगवान रे भरोसै रहणो ।
(ख) मोटा मिनखाँ सूं हेत राखणो ।
ग, नेताँ री बात नैं सान्ती मानणी ।
(ध) झूंठो हेत जमाणो ।
(च) बिरखा रे भरोसै खेती करणो । ( )

२. 'सामी छाती ज्ये कोई आयो जोर जताणो पड़सी ।
सामी छाती आणै रो सही अरथ है ।
(क) सामनो करणो ।
(ख) छाती पर मूंग दळणा ।
(ग) छाती छोलणो ।
(घ) बाथाँ बाथाँ मिलणो ।
(च) सामो चालर आणो । ( )

३. डूंगर उड़ाया सिल उड़ी नहीं
इण पंक्ति मे डूंगर अर सिल प्रतीक है ।
(क) भाखर अर भाटारा ।

(ख) राजा अर रंक रा।

(ग) नेता अर जनता रा।

(घ) तरवार अर तिणकै रा।

(च) झूंठ अर सांच रा।

४. 'इंकलाब री आंधी' कबिता में कवि रो मूल उद्देश्य है।

(क) ऊँच नीच रो भेद वताणो।

(ख) धनपतियां री बुराई करणो।

(ग) राजावां नै राख में मिलाणो।

(घ) मदरा मतवाळा नै खरी खोटी सुणाणो।

(च) जनतन्त्र रो नवल संदेश सुणाणो। ( )

५. इणरा विलोम सबद लिखो।

रंक, दोरो, मूंगी, भोळी जोत।

६. नीचै दिया सबदाँ रा हिन्दी पर्याय लिखो।

घोचो, आंचळ, उखरड़ी, कामेतण रमै।

७. नीचै दिया मुहावरां रो अरथ वताओ।

पसवाड़ो फेरणो, रंग जमाणो, भाग वदलणो, ढोळ वजाणो सामी छाती चढ़णो।

८. 'चेत मांनखा' कविता मे खेतरी माटी व रसा नै कांई सीख देवै।

९. करसाँ री सौ सौ पीढ़ी भूखी प्यासी क्यूं मरगी ?

५० सवदाँ में उत्तर दो।

०. धरती नै मोत्यां मूंगी क्यूं मानै ?

१. इंकलाव री आंधी में रखवाड़ाँ री कांई दशा हुई ?

२. 'लखपतणी मरगी लड़खड़ती इण उक्ति रो भावार्थ स्पष्ट करो।

३. 'राली रे रंज नहीं लागी'

इण पंक्ति में इंकलाब री आंधी रो कांई प्रभाव प्रगट हुवै ?

४. इंकलाब री आंधी अर साधारण आँधी में कवि कांई अन्तर वतायो

१५. चन्द्रसिंह

चन्द्रसिंह रो जनम बीकानेर जिले में गाँव बिरकाळी में संवत् १९६९ में हुयो। मरुधर रो प्रकृत चित्रण आप रो मुख्य विषय रह्यो। राजस्थानी भासा रे लोकप्रिय छंद दूहा में 'लू' अर बादळ ने सांतरी सिणगारी। 'लू' बाँच्यॉ इसो लखावै जाँणै दूहे दूहे बळती लूवाँ रा खैखाड़ बाजै पण मन झुलसै कोनी। बादळी बाँच्याँ सावण भादवा री उल्हारा आवै। इण दूहा में मन रमै हुलसै अर मगन हुवै।

प्रस्तुत संकलन मे बादळी रा २१ दूहा चुणर लीना है। मुरधर रा मिनख बादली ने माथै हाथ दियां ऊभा ऊडकै। बादली रा घणां कोड करै। बादळी दीख्याँ घणा उमावै अर नैण भर-भर ने वारणाँ लेवै।

'बादळी' एक आछी लोकप्रिय रचना है जिणरा अनेक संस्करण छ्पी-जग्या। 'बादळ' पर कवि ने नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी सूं 'रत्नाकर पुरस्कार' मिल्यो।

१५. बादळी

आस लगायाँ मुरधरा, देख रही दिन रात।
भागी आ तूं बादळी, आयो रुत बरसात ॥१॥
कोरॉ-कोरॉ धोरियाँ, डूंगा-डूंगा डेर।
आव रमां ए बादळी; ले ले मुरधर ल्हेर ॥२॥
ग्रीखम-रुत दाझी धरा, कळप रही दिन-रात।
मेह मिलावण बादळी, बरस बरस-बरसात ॥३॥

सोने सूरज ऊगियो, दीठी बादळियाँ ।
मुरधर लेवै वारणा, भर-भर आंखड़ियां ॥४॥
सूरज किरण ऊंतावळी, मिलळ धरा सूं आज ।
बादळियां रोवयां खड़ी, कुण जाणै किण काज ॥५॥
सूरज ढकियो बादल्यां पड़िया पड़द अनेक ।
तदपै किरणां बापड़ी, छिकै न पड़दो एक ॥६॥
ऊंडी अंबर में उठी गहडंबर घहराय ।
बरस सुहाणी वण घटा, सारी धर सरसाय ॥७॥
घटाटोप आभो घिर्‌यो, रह्यो खूब घरराय ।
आखी जीवा-जूण रो, हियो हिलोळा खाय ॥८॥
काळी-काळी कांठळी, उज्ळी कोरण जोय ।
उत्तर दिस में उठ्यो, वॉण हिवाळो होय ॥९॥
अम्बर मे उमडी घटा, आभै अटकी आँख ।
चढ़-चढ़ छाताँ छोळ में, मोर संवारै पाँख ॥१०॥
पळ-पळ में पळका करै आभै भर्‌यो उजास ।
जाणै प्रीतम-खोज में, छाणै बीज अकास ॥११॥
भूरी काळी बादळी, बीजळ रेख खिंचाय ।
जाण कसोटी ऊपरां, सुवरण-रेख सुहाय ॥१२॥
सोरभ आवै सोगुणी, मिळियो धर सूं मेह ।
हूंगे सांसां जग पिये, हिवड़ै भीतर नेह ॥१३॥
किरसांणाँ हळ साँभिया, चित से आयो चेत ।
हरख भरया सै पूगिया, अपणै-अपणै खेत ॥१४॥
बीजाँ अंकुर फूटिया, अळसाया सरसाय ।
हरिया-भरिया फूलड़ा, फूल्या-फळिया जाय ॥१५॥

अंबर झूलै बादळी; धण झूलै झूल्लांह ।
वेलां बिरछां-डाळियां, हिवड़ो हिवड़ै माह ॥१६॥

चांद बिलूवी बादल्यां, कर-कर मन में चाव ।
मुळकै मिल-मिल मोद में, पळ पळ नवलो भाव ॥१७॥

बांदळियां आभो घिर्‌यो, बिच-बिच चांद सुहाय ।
लुक-मचणी लाग्यो रमण. मुळक-मुळक मन मांय ॥१८॥

कठैक वंजड़ बरसगी, कठैक आवै खेत ।
तरसा मत इण रीत सूं, वदळी वरस सचेत ॥१९॥

हरिया हरिया कंकड़ा, कामी झूंमण वेल ।
हलको झोलो पवन रो. आय बिगाड़ै खेल ॥२०॥

आज सिधावो तो सिधो, दीज्यो मती बिसार ।
तिसवारी जद अवासी, सुध लीज्यो उण वार ॥२१॥

—चन्द्रसिंह

अभ्यास रा प्रश्न

१. मुरधर लेवे वारणा, भर भर आंखड़्यां ।
भर भर आँखड़ियाँ रो कारण है ।
(क) काली काँठळ घणी सोवणीं लागी ।
(ख) वादळी घणाँ दिनाँ पाछै दीसी ।
(ग) मुरधर नै वादली री ओल्यूं आवै ।
(घ) वादळी आभै ऊभी मुरधर नै तरसावै ।
(च) वादळी मुरधर री आस नी पूरी । ( )

२. आखी जीवाजूणरो हियो हिलोळा खाय ।
हियो हिलोळा खाय रो अरथ है ।
(क) हियो हीं जरै ।
(ख) हियो हाथाँ बाथाँ नीं रैवै ।
(ग) हिया में आणूतो कोड आवै ।
(घ) हियो डगमगावै ।
(च) हियो भछभेड़ा खावै । ( )

३. तरसा मत इण रीत सूँ बदळी बरस सचेत। किसाण आ बात क्यूँ कही?
(क) बादळी ओळा बरसागी ।
(ख) बादळी आई बाँ पगाँ ही चलीगी ।
(ग) बादळी बायरा में उडगी ।
(घ) बादळी आधो खेत सूखो छोड़गी ।
(च) बादळी बरस्याँ विना चलीगी । ( )

४. आज सिधावो तो सिधो दीज्यो मती बिसार ।
आ बात किण नै कहीं ?
(क) पति नै ।
(ख) बादळ नै ।
(ग) चाँद नै ।
(घ पंछी नै ।
(च) मोराँ नै । ( )

५. नीचै लिखी ओळियाँ रो आशय स्पष्ट करो ।
(क सोरभ आवै सौगुणी मिळियो धर सूँ मेह ।
(ख) वेलाँ विरधाँ डालियाँ हिवड़ो हिवड़ा माँय ।

रात री अे नैनकड़ी बैन
उड़ै है कूं कूं थाळ संभाळ ॥१॥

चिलकै सोने रा चीलरिया,
बंधगो वा रूपाळी पाळ ।
कूंपलो किण रो ढुळियो आज
गुदळतो घण असमानी ढाळ ॥३॥

घणी चिड़कलियां री चैंचाट,
रूंख री डाळा रो संसार ।
करै खुल मन री वार्ता दोय,
मनीजै सुख-दुख री मनवार ॥४॥

मिळै माळां में चांचां खोल,
पंखेरू विचिया इदकै मोद ।
मिळण रो कितरो मोटो चाव.
हजारां हिवड़ा रो परमोद ॥५॥

झंवरा झुटपुटिये री वेल,
खुलै वा अन्धारै रो आंख ।
वेल लख लचकांणी पड़ जाय
लजाळू सिरकै पल्लो नांख ॥६॥

वेल रे खोळै में धर सीस,
कंवळा फूल रह्या ऊंगीज ।
पान री लीली सेजां हीड,
बिलमता रह्गया यूं बिलमीज ॥७॥

रोवता टाबरियां ने छोड़,
आई दूवण ने घर नार ।

घणेरी व्हेगी गोयर भीड़;
सुणीजै मीठी दूधां धार ॥ ८ ॥
जिण घर धवळ धार री कार,
करूं मिनखां रो कितरो मोल।
अजांणी सरग-पुरी रो सार,
राखलूं कुणसी लालां तोल ॥ ६ ॥
सांझ रो क्यूं पाछो परभात,
करै कुण टावरियां रो खेल ।
जगत है वण-मिटवा रो नाम,
अंधारै उजाळै रो मेळ ॥ १० ॥
लोभ रे कूंडाळै में आज,
उड़ाई आभै तांई खंख ।
जगत री जग में ही रह जाय,
वणावै नर सोने री लंक ॥ ११ ॥
विहाणै पोयण पंथ पवाण,
उगूणी ऊषा धरती आय ।
कसूंवल आंख्यां में भर राग,
धड़कता हिवड़ा से हरखाय ॥ १२ ॥

—नारायणसिंह भाटी

अभ्यास रा प्रश्न

१. सांझरो क्यूं पाछो परभात
करै कुण टावरियां रो खेल ।
इण पद में टावरियां रा खेल री विशेषता हैं ।

(क) मेटे अर माडै ।
(ख) नवी रामत रमै ।
(ग खेलै अर भाजै ।
(घ) रमै अर रोवै ।
(च) हंसै अर कूदै । ( )

२. "बणावै नर सोने री लङ्क ।"

सोने री लंक वणावण रो अरथ है ।

(क) लालच रे गैलै लागणो ।
(ख) घणो धन जोड़णो ।
(ग) माया रे लारै लागणो ।
(घ) घर नै सोना सूं मंढणो ।
(च) अणहोणी बात सोचणी । ( )

३. रात री औ नैनकड़ी वैन
उड़ै है कूं कूं थाळ संभाल ।
अठै कूं कूं सूं अभिप्राय है ।

(क) सांझ री लालिमा ।
(ख) कूं कूं रा मांडणा ।
(ग) आरती रो थाळ ।
(घ) कूं कूं रा पगल्या ।
(च) कूं कूं रो टीको । ( )

४. "जिण घर घर धवळ धार री कार ।"
धवळ धार रो अरथ है ।

(क) तलवार
(ख) गंगाजळ

(ग) छाछ

(घ) दूध

(च) धोळा केस ( )

५. नीचै लिखी ओलियां रो भावार्थ लिखो ।

(क) कूंपलो किण रो ढुलियो आज ।

(ख) कसूंमल आख्यां में भर राग

(ग) लजाळू सिरकै पल्लो नांख ।

६. नीचै दिया सबदां रा हिन्दी पर्याय लिखो ।

पोयण, कंवळा, रूपाळी, कोड, अचपळी, उगूणी, आंथूणी ।

७. कवि रात री नान्ही वैन कुण नै वताई ?

८. कवि दिन नै अचपळो किण कारण सूं वतायो ?

९. सांझ धरती पर किण भांत उतरै ?

१०. सूर्यास्त रे पछै कवि आंथूणी रा आंबर रो वरणन किण सबदां में करै ?

११. सांझ वेळा धरती पर आंणद छा जावै ।
सांझ कविता रे आधार पर इण रा दोय उदाहरण दो ।

१२. सांझ रा प्रकृति-चित्रण रा दोय चित्राम अपणां सबदा में व्यक्त करो ।

१३. आप रा गांव री सांझ रो वरणन करो ।
सवद सीमा १०० सवद ।

१७. गजानन वरमा

गजानन वरमा राजस्थानी कविता ने लोकगीतां री सौरभ, स्वाद अंर सुर दीनो। आपरी कविता मे परिवार, समाज अर गावां रा जीवण रो सजीव चित्रांय निगे आवै। राजस्थान रा लोकगीतां री आतमा ने झकझोर, गीतां री गंभीर भावना ने परख नवैं गीतां री नवी बानगी राजस्थान ने दी। गेयता आपरी कविता रो मोटो गुण है। कविता री भासा बोल चाल री भासा सूं मिलै।

गजानन वरमा रतनगढ़ रा वासी है। इण संकलन में आपरी एक लोक-प्रिय रचना चुणर लीनी है। सोवन थाल एक गांव रा सुखी पारिवारिक जीवण रो सफल सजीव चित्रण है।

१७. सोवन थाळ

पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पांख-पंखेरू पीपळ—डाळ।
छोटी दयोरांणी पीसण बैठी
बाजर-मोट चिणां री दाळ।
बडी जिठांणी जायो गीगलो
बाजण लाग्यो सोवन थाळ।
नणद सुरंगी सात्या देवै
घर घर बांधै बांनरवाळ।
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पांख-पखेरू पीपळ—डाल।

दिन चड़ आयो गोवैं ऊभ्यो
गाया रो म्हारो कान्ह-गुवाळ।
आंटो-टूंटो हाथ गेडियो
सिर पर वांध्यां लाल रुमाल।
कांधै लटकै लाल लोटड़ी
संकड़ी है माटी री नाळ।
घर की धिराणी गाय उछेरे
मधरी मधरी चालै चाल।
पौं फाटी जद वोलण लाग्या
पांख-पखेरू पीपळ—डाळ।
धीकी देय' र हांकण लाग्यो
गायां ने गुवाळियो रे लाल।
फळसै वा' रे टाबर खेलै
खेत बणावै बांधै धाळ।
गोबर चुगै सहेल्यां रळमिल
थाप थेपड़ी करै कमाल।
मरद लुगाई यूं वतळावै
आयो समो भाजग्यो काळ।
पौं फाटी जद वोलण लाग्या।
पांख-पखेरू पीपल—डाळ।
आँगण मे दो चुगै चिड़कल्यां
विखरेड़ी चाकी री दाळ।
छोटी नणद बुवारी काढ़ै
लुळ लुळ साफ करे है ठाण।
दादी ताई चरखो कातै
बैठी है बै पीढ़ो ढाळ।

राख रावड़ी घोळ संवारैं
चतर चरखलै री वै माळ ।
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पाख-पखेरू पीपळ-डाळ ।

हाळी हळ रा ठाट संवारैं
गावे है तेजे री ढाळ ।
मिनख मजूरी करण लागग्या
लेकर कसिया और कुदाळ ।
डूंचे बैठ्या भोळा भाई
करै खेतरी नित रखवाल ।
मणैत रा त्यूंहार मनावैं
नाचै गावैं दे दे ताळ ।
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पांख-पखेरू पीपळ-डाळ ।

छोटी द्योरांणी पीसण बैठी
बाजर-मोठ चिणां री दाळ ।
बड़ी जिठाणी जायो गीगलो
बाजण लाग्यो सोवन थाळ ।
नणद सुरंगी सात्या देवैं
घर-घर बांदै बांनरवाळ ।
पौ फाटी जद बोलण लाग्यां
पांख-पखेरू पीपळ-डाळ ।

—गजानन वरमा

अभ्यास रा सवाल

१. घर में गीगलो जनमै जद कांई वाजै ?

(क) ढोल

(ख) नगारा

(ग) सहनाई

(घ) थाळ

(च) अलगोजा ( )

२. आयो समो भाजगो काळ रो अरथ है ।

(क) आज काल करता ऊमर बीतगी ।

(ख) चोखो जमानो हुयगो ।

(ग) मौत रो डर मिटगो ।

(घ) सामनो करतां ही भाजड़ पड़गी ।

(च) सहजां ही सांप मरगो । ( )

३. दादी ताई चरखा री माळ किण चीज सूं संवारै ?

(क) राख रावड़ी सूं ।

(ख) ताता पाणी सूं ।

(ग) दूध री थर सूं ।

(घ) मीठा तेल सूं ।

(च गाय रा गोवर सूं । ( )

४. कान्ह-गुवाल कवि रा सवदां में गायां उघेरी ।

(क) पौ फाटता ही ।

(ख) दिन उग्यां पहळी ।

(ग) दिन उगता ही ।

(घ) चढ़तै दिन ।

(च) दिन मथारै आयो जरां । ( )

५. नीचै दिया सबदां रा हिन्दी रूप लिखो :

सुरंगी, वांनरवाळ, गेडियो, लुगाई, मंदरी, गोवो।

६. नीचै दिया मुहावरां रो अरथ बताओ।

छीकी देणो, थाळ बजाणो।

७. गीगलो जनमता ही घर मे काँई उछाव करै ?

८. कवि नणद नै सुरंगी क्यूं बताई ?

९. राजस्थान में सात्या देणरी काँई प्रथा है ?

१०. घरां में वानरवाळ किण मौके बांधी जावै ?

१८. रामनाथ व्यास परिकर

रामनाथ व्यास परिकर रो जनम सन् १९२९ में बीकानेर में हुयो। आप विद्यार्थी जीवण में ही राजस्थानी काव्य रचना री ओर अग्रसर हुया। रवि ठाकुर री गीताञ्जली रो आप राजस्थानी में अनुवाद करचो। लेनिन माथै रचियोड़ी रूसी कवितावां रो आप अनुवाद करयो। इण रचना पर आपनै रूस सूं पुरस्कार भी मिल्यो।

रामनाथ व्यास री कविता में गतिसीळ जीवण रा दरसण हुवै। नवै समाज रा नव निर्माण रा सुर मिलै। आपरी कवितावां में मेहनत रो महातम अर सोसण रो खंडन है।

इण संकलन में आपरी एक देस भगती सूं परिपूर्ण भावभरी कविता लीनी है। कवि देस रे खातर मर मिटवाळा झूंझारा रा दरसण करावै अर नव जागरण रा नव संदेस सुणावै।

१८. इण धरती कद मानी हार

इण धरती कद मानी हार
निपजै साख वीरता री नित, माथाँ रो होवै बीजाण,
रगतदार सूं पाणत पीवै, रण-खेतां में घुरै निसाण,
कण-कण जाणै इण धरती रो, भाखर डूंगर है सैनाण,
आभैयो थर्रावै ऊभो, पंछीड़ा गावै गुणगान,
समदरियो ले उफण हबोळा, नद नाळा जावै बलिहार।
रिच्छा करै हिमाळै ऊभो, हुलरावै गंगा री धार,
सागर गावै अगम सुरां में, वन वन मंदरी उड़ै बयार,

सोनल दिन रूपाळी रातां; रुत-रुत रा साजै सिणगार
फळै वेल मुसकावै फुलड़ा, अमर सहोदां जावै वार,
सरणै आण पड़्या उण पायो, गोदी मे मायड़ रो प्यार ।

अगन-झळां में दम दम दीपै, घणी पद्मण्यां रो वो रूप,
आन मान मरजादा खातर, घणां जणां दीन्या सिर सूंप;,
कांकण-डोरा पड्या पगां में, मन में पिरतग्या रो ध्यान,
वन-वन फिरया घणा दुख झेल्या; नित राख्यो माता रो मान
फारस, मिसर, अरब, तातारी, घणां सिकंदर करी जुहार ।

लूट छावणी लाया डूंगजी, राज फिरंगी ने ललकार;
कटगी वेड़्यां खिरी हथकड़्यां, कोट लांघ चमकी तरवार,
वादुरसा, नोना साहब अर वीर तांतियां सा सिरदार,
स्यामसिंघ, खुसियाळ कंवर सिंघ करणै रतनै सा झूंझार,
जगी जोत आजादी रो, ले राणी लिछमी रो अवतार ।

नुंवै देस री नुंवी कल्पना, नुंवो मिनख जीवण पावै,
आज खेत मे नुंवो धानड़ो, मुलक-मुलक मंगळ गावै,
घुरै आज है नुंवो नगारो. नुंवो रगत उफण्यां जावै.
नुंवै राग रो नुंवो गीतड़ो. नुंवै सुरां निरभै गावै ।
सौ बरसां सूं आजादी रो नुंवो सई को करै जुहार ।

— रामनाथ व्यास परिकर

अभ्यास रा सवाल

१. "अगन झळां मे दम दम दीपै ।"
इण पंक्ति में अगन झळां रो अरथ है ।
(क) दिवलै री लोय ।

१९. सत्यप्रकाश जोशी

सत्यप्रकाश जोशी आजकल बम्बई में हिन्दी रा प्राध्यापक है अर राजस्थानी मासिक पत्रिका 'हरावळ' रे सम्पादक रो काम करै। हिन्दी कवितावां मे आछी ख्यात रे उपरान्त सत्यप्रकाश जोशी राजस्थानी मे कवितावाँ लिखणो चालू करयो। 'राधा' आपरी पैली रचना है। 'दीवा काँपै क्यूं' आपरी फुटकर कवितावाँ रो दूजो संग्रह छप्यो। जिण मे भासा अर सैली रा नवा नवा प्रयोग कीधा।

प्रस्तुत संकलन में आपरी दो रचनावाँ लीनी। अरज अर हर। 'हर' आपरी भाव पूर्ण अर सरस रचना है, जिण मे बम्बई जैड़ी महा नगरी रे विचाळै मरुधर रा एक मिनख ने जनम भौम री याद आवै। हिया रा भाव आखराँ में उत्तर आवै।

१८. अरज

सारद माता सीस निवाऊं, ओवर दीजै,
मन री बाताँ सैंज सुणाऊँ, आखर दीजै।
सबद अकथ री मूंन तुड़ावै,
सबदां री मुतियाँ बण जावै,
ग्याँन सिवट सबदाँ में आवे,
वाणी ! ओ कारियाबर कीजै।
प्राणाँ सूं सबदाँ ने सिरजूं.
सबदाँ सूं जग पीड़ा परसूं.
रूप अरूप सबद सूं निरखूं.
सबदां माँही आदर दीजै।

सवदां सूं भारी तुल जाऊं,
सवदां सूं मूंघो विक जाऊं,
सवदां में जीऊं, मर जाऊं
सवदां री आगेतर दीजै ।
सारद माता सीस निवाऊं ओ वर दीजै ।
मन री वातां सैग सुणाऊं आखर दीजै ।

हर

लगतोई गाज्यो रे सांवण ने भादर वो
अवर सूं धारोळा ओ सरता आवै है,
रेळा तो उतरे म्हारी मेड़ी री लाल किंवाड़ी
बाळापण रो, गांव री घणी हर आवै है ।
रळकाती मेह थनै वांकड़िये केसां में,
पलकां रे छाजै रिमझिम छांटां मे टोळती,
ऊंचै चढ़ डागाळिये बाथां में भर लेती,
कंचन सी काया ने डावर मे झिकोळती
छांटां ने रग देती टप चंवतै मजीठ,
भीज्योड़ी चुनड़ी रे सळां मे लुकाती म्है,
सरवर री पाळ सात साथणियां साथ लेय
आंवां री डाळां थनै हीडा हीड़ाती म्है ।
पण थूं तो धायोड़ी धरती रो पांणतियो
समदर रा जायोड़ा समदर ई विलमावै,
तिरसी है रतन तळायां, तिरसाई हंसला
देसां रो सांवण तो सूख ई टळ जावै ।
बरस्यां जा बरसां लग इण मोटी नगरी में
कूं कूं रे पगल्या, कुण बधावैळा फेरां में

भागै है जीवण तो आँचो ने उँतावळो,
मिनख अठै चकरी चढ़ घूमै है घेरा मे ।
पग पग इण नगर झुकी सतखँड हवे'लयाँ
आभा ने धरतीं सूँ आगरे ई सरकावै
ढक लेवे चन्दा ने सूरज रा पळका ने
उमड़ घुमड़ वाद'ळिया कुण जाणै कद जावै ।
गोली ज्यूँ बंधियोड़ी विजळी इण नगरी मे,
कुण जाँणै आभा में गोरी सी कुण खिवै ?
लोखण कळ पुरजाँ रा ऊँडा धमाकाँ वीच
कुण जाँणै आभा में इन्न रयो धररावै ।
मागै है मारग मे अणगिणिया मिनख रूप;
छाँटाँ रे पड़ताँ ई भाटाँ मे विलमावै ।

ऊँची चढ़ रोकै जे मारग विरखा दे रो,
भूखी है भीताँ, वै मिनखाँ ने गिट जावै ।
पग पग नो भोम रुकी भाटाँ सूँ की करवै
माटी री कूख हरी हरियाळी सरसण दे ।
बोलनी सवावै जदे मोराँ पपीयाँ रा,
मिनखाँ रे बस मे व्हे विरावानी वासण दे ।
टाबर नी मोद करे मेह वावा झुक रे झुक
ढूलो तो मर जावै ढूली पण नी रोवै ।
कथ नी पधारै धरे भीगी ले पागड़ी
तन घुळियो लाल रंग काँमणियाँ नी चावै ।

कुण गावै कुण नाचै मन मे कुण मोद करै;
कुण जाँणै चोक सिगरथ पाँवणी आई है ।
कुण पूछै वात अठै देसाँ परदेसाँ री,
देवाँ रो काँई आ संदेसौ लेर आई है ।

छोड़ 'मनखावणी इण मोटी नगरी नै;
जूनी मी गेडी रे डागळिये जावण दो।
आडा तो टेढ़ा म्हारे पड़वा बंधाय राज,
सावण भर अलबेली डरावा मे न्हावण दो।

– सत्यप्रकाश जोशी

अभ्यास रा प्रश्न

१. कूं कूं रे पगल्या कुण बधावेला
कूं कू रे पगल्या बधाणै रो तात्पर्य है
(क) स्वागत सत्कार करै।
(ख) आया रो मान राखै।
(ग) कूं कूं रा पगल्या मांडै।
(घ) पगाँ रै कूं कू लगावै।
(च) कूं कूं रो थापो देवै। ( )

२. तिरसी है रतन तलायाँ तिरसाई हंसला। कवि नै कठारी रतन तलायाँरी याद आई?
(क) माळवा री
(ख) गुजरात री
(ग) मरुधर री
(घ) मान सरोवर री
(च) सारा देश री ( )

३. वरस्याँ जा वरसां लग इण मोटी नगरी में।
अठै मोटी नगरी किण नै बताई?
(क) दिल्ली
(ख) बनारस

हर आबाळा का पगाँ तलै, मै पलकां फैलाती रूं छूं।
अर जावाळा नै दूर तलक, पोंछाबा नै जाती रूं छूं।
हिवड़ा मैं धधकै आग और आख्यां मै आंसू बरसै छै,
पण इतरी होतां सातर भी, होटाँ सै मुसकाती रूं छूं।
ज्यो भी आयो बो मन चायो करगो म्हारो पर कास घैण।
मै छूं बजार की लालटैण ।। २ ।।
मैं ज्यां कै तांई जुपूं, मनै वे खुदी फोड़बो चावै छै,
म्हारे माळै भाटा बगार, वै ओठा मन मैं स्यावै छै।
जीतै न कुम्हार कुम्हारी नै अर कान गधी का जाई ठै,
या एक कहावत छै जीनै वै सांची कर र दिखावै छै।
मै फूटी तो- वै जुप ऊठी म्हारी भैणां लैण की लैण।
मै छूं बजार की लालटैण ।। ३ ।।
थां जस्या सुधारक कितरा ही जनम र मरगा अर मर जासी,
पण मैं यूं ही जुपती रै स्यूं, मारी हालत न सुधर पासी।
मूं नै मत छेड़ो जुप बाद्यो, बस ई मै ही थांको हित छ,
नातर तो वंधबा कै बदलै, ओठो घर बंध्यो बिखर जासी।
थे टपटेळा खाता फिरस्यो होता सांतर भी खुला नैण।
मै छूं बजार की लालटैण ।। ५ ।।

—बुद्धि एकाश पारीक

अभ्यास रा सवाल

१. सड़का पर जनम बिताऊं छूं।
आ बात कुण कही ?
(क) सड़क पर सूतो भिखारी
(ख) चोराया रो सिपाही

२१. कल्याणसिंह राजावत

कल्याणसिंह राजावत नागोर जिले रा चितावा गांव रा वासी है। आप अध्यापक रो काम करै। आप छोटी ऊमर में ही राजस्थानी काव्य रचना में रुचि लेण लागा। थोड़ा दिनां मे ही आप राजस्थानी कवि सम्मेलना रा लाडला कवि वणगा। मनांरी प्रीत अर अथिर जीवण रो छळावो आपरी कवितावा रो खास विसय। प्रकृति री छिब रा चित्राम बणावा मे भी आप घणाँ सिद्धहस्त।

राँमतिया मत तोड़' नाँम सूं आपरी कवितावाँ रो एक सुन्दर संग्रह छपियो। आपरी काव्य रचना मे सबद-चयन अर मौलिकता घणी मोवणी लागै। इण संकलन मे आपरी एक रचना लीनी है जीण में मिनखातन री अथिरता रे सागै प्रकृति री परिवर्तनसीलता रो चित्र खेच खण भंगुर जीवन री सार्थकता निरर्थकता रो ससक्त सजीव चित्राम कर्‌यो है।

२१. गाड्यां निकळो चाला रंग्या

अळगै देसाँ रूंख ओझल्या; नैण पंथड़ा गीला रैग्या,
ऊमर री गाँठड़ल्याँ लाद्‌याँ, गाड्या निकळी चीला रैग्या।

फलसै फलसै वज्या नगारा, आँगण आँगण पायल वाजी।
नैणाँ नैणाँ काजळ सार्‌यो, हाथ हथेळी मैंदी राची।
कंठ कंठ में गीत सुहाया, जद वनडी चंवरी में आई।
दिवलो दिवलो जोत उजाळी साधण मुळकी प्रीत वंधाई।
रूप मैं लरी नीव निकरमी, गोख गरकताँ टीला रैग्या।
ऊमर री गाँठड़ल्याँ लाद्‌याँ, गाड्याँ निकली चीला रैग्या।

फूल फूल पर भवरा आवै, डाळी डाळी आवै पंछी
लैर लैर पर जोवण थिरकै, प्रीत वटाऊ क्यूं कर थमसी।

गीताँ पाछै आँसू ढळकै सहनाई संग चिता बळै रे।
रूप छाँवळी दरपण दरसै, मुरथळ तिरसा मिरग छळै रे।
कुण सिकली गर चकर घुमावै, धार टूटगी खीला रैग्या।

धरा गूदड़ी गिगन झूंपड़ी, चाँद सुरज रा दीप उजाल्या,
बायरिया री लाँबी चादर, ओढ़ पोढिया लाल दुलारा।
सपनाँ रे मिस बाग लगाया, मुळकी वळियाँ कूंपळ सारी,
फूल फूलिया फलड़ा फाल्या, सौरभ ढुळगी क्यारी क्यारी।
कुण चिणगारी आग लगाई, साँसा लळगी खारा रैग्या,
ऊमर री गाँठड़ल्याँ लाद्याँ, गाड्याँ निकळी चीला रैग्या।

ईंट ईंट सूं अंबर नाप्यो बायरिये खुलग्या चौबारा,
नींव अटारी न्यारा न्यारा आछो भेद कर्‌यो चेजारा।
तार तार सूं ताँणो ताँण्यो, आँतों चिपगी गिणती तारा,
थाँन बणाया डील उघाड़ै, वेजाँ होग्या रे चेजारा।
हाथ कमाई हाथ न आई, धाड़ो पड़ग्यो ढीला रैग्या,
ऊमर री गाँठड़ल्याँ लाद्याँ गाड्याँ निकळी चीला रैग्या।

— कल्याणसिंह राजावत

अभ्यास रा सवाल

१. ऊमर रीं गाँठडल्याँ लाद्‌याँ गाड्याँ निकळी चीला रैग्या।
कवि रा इण कथन में जीवण रो काँई साँच चौड़ै आवै ?
(क) जीवण अथिर है।
(ख) जीवण बोझल है।
(ग) जीवण रा अनेक गैला है।

(घ) जीवण सार हीण है ।
(च) जीवण मे उतार चढ़ाव है । (

२. गीतां पाछै आंसू ढलकै सहनाई संग चिता वळै रे।
इण उत्ति रो मुख्य भाव है ।
(क) सांच झूंठ ।
(ख) छळ पाखण्ड
(ग) आँणद उछाव ।
(घ) सुख दुःख ।
(च) शोक संताप । ( )

३. धरा गूदड़ी गिगन झूंपड़ी इण पंक्ति मे अलंकार है ।
(क) अनुप्रास
(ख) वँण सगाई
(ग) उपमा
(घ) रूपक
(च) अन्योक्ति ( )

४. नीचै लिखी ओलियां रो आशय स्पप्ट करो ।
(क) धार टूटगी खीळा रेंग्या ।
(ख) गीतां पाछै आंसू ढलकै ।
(ग) सपनां रे मिस बाग लगाया ।

५. इण ओळियाँ रो भाव सौंदर्य वताओ ।
(क) आँगण आँगण पायळ बाजी ।
(ख) आँता चिपकी गिणती तारा ।

६. नीचै दिया सवदाँ रा हिन्दी पर्याय लिखो ।
चीला, चंवरी, मुळकी, कूंपळ निकरमी, धाड़ो, उघाड़, साथण ।

७ नीचै दिया मुहावरां रा अरथ लिखो।
तारा गिणणा, आँता चिपणी, नैण पीला होणा,
सपनां में वाग लगाणा, आसूं ढलकाना।

८. कवि रूप में ल री नीव नै निकरमी क्यूँ वताई ?

९. "कुण सिकलीगर चकर घुमावै।"
कवि सिकलीगर किण नै बतायो ?

१०. कवि जोबन री अथिरता री बात किण रूप में कही ?

११. कवि चेजारा रे मिसकाँई सीख दी ?

१२. "गाडयाँ निकली चौला रैग्या"
कविता रो मुख्य भाव काँई है ?



२२. रघुराज सिंह हाडा

रघुराज सिंह हाडा रो जनम गांव चमलासा झालावाड़ मे सन् १९३४ में हुयो। विद्यार्थी जावन मे ही आपरी रुचि काव्य साधना रा दिसा मे मुडी। समाज-शिक्षा रे सागै सागै आप गावां री जनता ने रस भरया गीत सुणा भाव विभोर करता आया। आपरी जादूभरी कवितावों हजारां कंठा में गूंजै। समाज ने इण गीता सूं नवी प्रेरणा मिलै। कविता अर गीतां री आपरी अनेक पुस्तकां प्रकाशन मे आई जिण मे 'घूघरा' घणी धमरोळ मचावै। 'अणबांच्या आँखर' आपरे राजस्थानी गीता रो नवो संकलन नीसरयो।

प्रस्तुत संकलन में आपरी पुस्तक घूघरा सूं छांट र पांच पद लीना। प्रत्येक चतसपदो आपरी न्यारी न्यारी मरोड़ राखै, न्यारा न्यारा भाव राखै। पण कवि री आतमा एक एक घूघरा मे झणकारा मारै।

२२. घूघरा

(१)

ग्या छा समंदर में तो अमरत को कळस ले आता;
सारी धरती को जहर सोरमार ले जाता,
चांद पै जार भी भाटा ही कांई लेर आया—
मन अंधेरो छो, चांदणी ही थोड़ी ले आतो।

(२)

लाखतारां सूं भी मानव की रात काळी छै,
फूल लाखूं छ पण कंवलां को बात नाळी छै,
पाणी का यूं तो समन्दर भरचा छै धरती पै,
प्यार का मद बना ऊमर को कळश खाळी छै।

(३)

साँस का साथ विना वंसरी न गरणावै,
हेत की ताळ बिना पायलाँ न झरणावै,
कोयलां बोल भी जावै कदी महलाँ ऊपर,
दैठ ऊमरायाँ में बोलै ज्यूँ उमंग न आवै।

(४)

होळी खेलो तो आंख सूं भी रंग ढोळो रे,
रंगभरया रसभरया मीट सा बोल बोलो रे
दाग झेलो रे प्रीत की गुलाल उड़ री छै,
गळै मिलो तो हिया का भी क्वाँड़ खोलो रे।

(५)

वाग मे छानै सेक झूमतो फागण उळग्यो,
चाल मतवाळी छी खसवू को कळश ही ढुलग्यो,
माचगी धूम सी कळियाँ की रग गळियां मे
सवका नैणाँ मे जाणै आज कसूम्बो ढुलग्यो।

—रघुराज सिंह हाडा

४. चाँद पै जार भी भाटा ही कांई लेर आय ।
कवि चाँद पर सूं कांई मगवो चावे
(क) अमरत
(ख) चाँदणी
(ग) सोनो चाँदी
(घ) रस को कलश
(च) कोई अमोलक चीज ( )

५. नीचै दिया सबदाँ रा हिन्दी पर्याय लखो
समंदर, अमरत, भाटा, कंवलाँ, हिया, ढलग्यो अर कसूंवो ।

६ इण रो आशय स्पष्ट करो
(क) मन अंधेरो छो
(ख) आँख सूं भी रंग ढोळो रे
(ग) बैठ अमरायां में बोलै ।

७. निचे लिखी ओलियां रो भावार्थ बताओ
(क) गलै मिलो तो हिया का भी क्वांड खोलो रे ।
(ख) सबका नैणाँ में जाणै आज कसूंवो ढुलग्यो ।

८. कवि सारी धरती रो जहर सोरसार कठै भेजणो चावै ?

९. कोयल महलां पर बैठ र बोलै जदी ऊमरायाँ पर बोले जसी उमंग क्यूं नही आवै ?

१०. लाख तारां में भी मावस की रात काली क्यूँ लागै ?

११. कवि होळी खेलबा को सही ढंग काँई बतायो ?
५० सबदाँ में उत्तर दो ।

१२. कवि चाँद पर जाबाळा ने काँई ओलमो दीयो ?

१३. फागण लागताँई मिनखाँ रा नैणाँ में कसूंवो क्यूँ ढुल जावै ?

२३. मणि मधुकर

हिन्दी नाटक, कहानी अर कविता ने लेय मणि मधुकर री देस व्यापी व्यांत। आंरी रचनावां देस री पत्रिकावां मे छपती रै वै। आप राजस्थानी मे भी लिखै। आज रे समाज रा पाखंड, अफंड; छळ छंद, झूंठ कपट अर अणूंता आडम्बर आपरी कवितावां रो खास विषय।

आपरी राजस्थानी कवितावां दुनिया री नवी कवितावां रे टाळै। सैली भासा अर भावां री दीठ मे आपरी राजस्थानी रचनावां बेजोड़। आप प्राध्यापक रो काम करै। अध्ययन चिंतन में आपरा समय रो सदुपयोग करै।

प्रस्तुत संकलन मे 'काळो घोड़ो' नाम री आप री एक आधुनिक राज-स्थानी रचना लीनी है। जीवण री कुंठा वेदना अर विसंगति रो इण कविता मे सरस चित्रण मिलै। इण मच्छगळागळ रे बीच आसारो धुंधळी किरण घणी हेताळू लागै।

२३. काळो घोड़ो

रात धनख डोर ज्यूं तरणावै
रीस मे भ'रयोडी
धोरां धूजै मेदी वरणी रेत
रूंख रुखाळा विनां तड़फा तोड़,
गिगन
मांदगी रे दोवड़े मे लुकतो

कळेस रा आखर चुगतो
ऊँडी लाम्बी निसाम छोड़ै,
सरणाटो घणो विकराळ घणो संकाळू है।
अन्तस में ऊकळै अपसूंण,
आँख्यां में
रड़कै काँकरा ने आळ-जंजाळ
हाथां सूं छूटती जावै लाव,
गोडाँ ताँई आयग्यो
तिरस्यो पाताळ,
कुण निगै राखै फूल-पानकांरी
समै रो डूंगर नचीतो अर निंदाळू है।
सरणाटो घणो विडरूप घणो संकाळू है।
च्यारूं कूंट अछूट अन्धारो
इतियास जणै-जणै रा मूंड़ा ओळावतो
सूत्या सबद ने मुडदां रा
घर-गोखा टोवतो फिरै,
इण खूणै काळस उण खूणे कीच-कादो,
कठै वासती
कठै वळ वळता अंगार,
कठै जिनगाँनी रो च्यानणो,
कठै नुंवै निरमांण रो गारो,
देखूं न पावूं ओ फेर एक मिनखरो
अळ सायो उणयारो,
पूंन पाणी री पलकाँ पलकाँ तिरै।

जंगळ में
काळो घोड़ो कुदड़का करै,
पण आस ने उजास रो पावणो घणो हेताळू है।
सरणाटो घणो विडरूप घणो संकाळू है।

— मणि मधुकर

अभ्यास रा सवाल

१. 'काळो घोड़ो' कविता मे कवि नै रात किसीक लागै ?
   (क) घणो डरावणी।
   (ख) अखूट अन्धारी।
   (ग) रीस में भरियोड़ी।
   (घ) कीच मे किलयोड़ी।
   (च) अळसाई अर लजकाणी। ( )

२. कवि रा सबदाँ में काळी रात में निसासा कुण छोड़ै ?
   (क) गिगन
   (ख) वियोगण
   (ग) सतायोडो मिनख
   (घ) धोराँ री धरा
   (च) तिरस्यो पाताळ ( )

३. अळसाया उणियारा रो अरथ है।
   (क) बिडरूप उणियारो।
   (ख) काळो उणियारो।
   (ग) उदास उणियारो।
   (घ) सूखो उणियारो।
   (च) आळसी उणियारो। ( )

४. कवि रे कथानुसार अन्धारा में जणं जणं रा मूंडा ओळखतो कुण फिरै ?

(क) पंछी

(ख) मिनख

(ग) कालो घोडो

(घ) इतिहास

(च) पावणो ( )

५. नीचै लिखी ओलियां रो आशय लिखो।

(क) अन्तस में ऊकळै अपसूंण।

(ख) हाथां सूं छूटती जावै लाव।

६. नीचै दिया सवदां रा हिन्दी पर्याय लिखो।

धनख, मांदगी, कळेस, आखर, काकरा, काळूस, उजास।

७. इण रा विलोम सबद लिखो।

लाम्बी, कळेस, रीस, विडरूप।

८. नीचै दिया मुहावरां रो अरथ बताओ।

हाथ सूं लाव छूटणो, आंख्या में कांकरा रड़कै,

निसासा छोडणो, तापडा तोड़ै।

९. नीचै दिया प्रश्ना रा उत्तर ३० सवदां में लिखो।

(क) धोरा री रेत रूंख रुखाळी विना किसी लागै ?

(ख) निरासा री रात में कवि नै कांई उजास दीसै ?

१०. कवि चारू कूंट अखूट अन्धारो किण कारण सूं बतायो ? ५० सबदां में उत्तर दो।

११. कवि निरासा अर पाखण्ड रो किण सवदां में वरणन करै ?

१२. आस अर उजास नै कवि हेताळू क्यूं मानै ?

१३. 'कालो घोड़ो' कविता रो मुख्य भाव कांई है ?

२४. गोरधन सिंह शेखावत

गोरधन सिंह शेखावत जिला सीकर रै लिछमणगढ कालेज में प्राध्यापक को काम करै। हिन्दी री नवी कहानी माथै शोधन रो काम करनै पी.एच.डी. री उपाधि लीनी। राजस्थानी रा उदयमान कवियां में आपरो नाम। आधुनिक जुग री नवी कवितावां रै परवाण नई सैली।

'किरकर' नाव सूं सात छोटी कवितावां रो एक संग्रह प्रकाशित हुयो। प्रस्तुत संकलन में 'मुरझायोड़ो पल' नांव री आपरी एक रचना लीनी। इण नवी कविता में जूनां दिना री गागरत रै मिस हर छिण जको धको आवै वो परम्परा री रूढ, जड अर निरजीव मर्यांद रै कारण मिनख रा मन में भांत भांत री कुंठावां भरै।

२४. मुरझायोड़ो पल

उदास कमरां री
धूळ सूं भरियोड़ी
टेबिल,
मरियोड़ै अतीत री
गिंध सूं फूल्योड़ी
दीवळ सूं खायोड़ी
मोटी पोथ्यां।
भीत पर

मकड़ी रा जाळां सूं
भरियोड़ी तसवीर रे उनमांन
धुंधळाता वरतमान री
पिछाण नीं,
खूटयां रे माथै
आपघात सारू
लटक्योड़ी डोरड़ी,
एक खुणे में
चिगदयोड़ा सोसन्या रंग रा
कागद ।
रीस अर निरासा सूं
काळी करियोड़ी
फाइलां रो मानसिक बोझ
कुंठा सूं दाझियोड़ा
दिनां री
अणचीती, बेविस्वासी,
का 'णी रा पैरादार,
थूक सूं
बदरंग हुयोड़ो
निरास आंगणो,
कठै-कठै

लीक लिकोळिया अर
काटा-पाटी करियोड़ी
जवानी रा पसीना सूं
भीजियोड़ी
कोजी अर चीगटी डायरी
छी ज्योड़ी ऊमर री
खरी गुवाईदार।
मार खायोड़ा
टाबर रैं मूंडा री
उदासी सा गिरम्यां रा दिन
बिखरया पड़्या,
फूटयोड़ी बोतल रा
काग सा टुकड़ां ज्यूं
जूनां दिनां री;
गांगरत में सांवटयोड़ा
खुद रा ताव सूं
पिघल्योड़ा
लागै कांटां सूं
भरियोड़ो अकास
उग्यायो म्हारै
दरवाजा माथै।

— गोरधन सिंह शेखावत

अभ्यास रा सवाल

१. छो ज्योड़ी अमर री गवाई कुण देवै

(क) धुंधळी निजर।
(ख) ढीली चामड़ी।
(ग) उदास उणियारो।
(घ) निरास आंगणो।
(च) कोजी अर चीगटी डायरी। ( )

. खूटयां रे माथै लटकती डोरड़ी कवि ने दरसावै।

(क) चीजा मेलण सारू।
(ख) गाभा टाकण सारू।
(ग) अपघात सारू।
(घ) छीको लटकावण सारू।
(च) गीगल्या री पालणो बांधण सारू। ( )

गिरम्या रा दिन नै कवि ओपमा दीनी।

(क) मार खायोड़ा टाबर रे मूंडा री उदासी री।
(ख) मुरझायोड़ा फूल री।
(ग) बदरंग हुयोड़ा निरास आंगणांरी।
(घ) मकड़ी रा जाळा सूं भरियोड़ी तसवीर री।
(च) कोजी अर चीगटी डायरी री। ( )

काळी करियोड़ी फाइल री सही अरथ है।

(क) लिखा पढ़ी करियोड़ा कागजां री फाइल।
(ख) काळा रंग री फाइल।

लोगड़ा कैवे
कई गाँव मे एक जेठू विया करतो;
जिको, किणरे ई भाई
किणरे ई भतीजो
किणरे ई काको
अर किणरे ई माँमो तो किणरे ई मासो
लाग्या करतो,
पण जाणै क्यूं
वो जद सूं करनल वियो
ओ गाँव माँय समझणो
कवो अब सगलाँ रे करनल ई लागण लाग्यो है
स्यात आपरी अणमणी लुगाई रे भी ।

\+ \+ \+ \+

कितो चोखो व्हेतो
जे कोई दुरगादास
अणचेत
सोताँ
ई गाँव नै भाली री अणी सूं बाटी ज्यूं पोयर
दाव दचे तो भोभर में,
गत तो व्हेती
आ टोटण रात
ई गांव में उतरण सूं पैली
म्हारी आंख्यां मे टोपां-टोपां
अंधेरो
ईयां तो नीं राळती ।

खैर……खैर
म्हनै अब ई टेम घणो आगो नी जावणो चाई जै
क्यूंक रूंगता ऊमा कर सकै
किणी भी जेज ताँई रे सोवणे मे
खुद रे गुमण रो
ई गाँव मे कठेई की व्हेगो है ।

—तेजसिंह जोधा

अभ्यास रा सवाल

घासीराम नीसरगो उगाड़ै माथै स्यापो वीसरगो ।
अठै घासीराम किण रो प्रतीक है ?
(क) नवाँ नेता रो ।
(ख) गॉव रा छोरा छापराँ री ।
(ग) गॉव रा बूढ़ा बडेराँ रो ।
(घ) जन साधारण रो ।
(च) ठाकराँ रा चाकर रो । ( )

कोल्डी रे आगै घासीराम नै उगाड़ै माथै देख ठाकर सोच करै । कारण
(क) ठाकर घणाँ दयालू है ।
(ख) ठाकर नामी परोपकारी है ।
(ग) घासीराम री गरीबी पर तरस खावै ।

६. कवि गांव नै वासी उवासी री उपमा क्यूं दी ?

७. नीचै दिया सवदां रा हिन्दी पर्याय लिखो।
चौमासो, जेव, भोमर, टोपो, सातरो, आँतरो, घोनाँ, धाँसी।

८. कोल्डी रे मूंडागा सूं घासीराम उगाड़ै माथै निसरगो।
ईंरो ठाकर सोच क्यूं करै ?

९. गाँव रा जेठू रे करनल वणता ही कांई आंतरो आगो ?

१०. गाँव रो सामाजिक जीवन कांई पलटो खायगो ? ५० सवदां में उत्तर दो।

११. कवि नै आज रो गाँव क्यूं खावा नै आवै ?

१२. युग रो नवो वायरो लागतां ही गाँव री मरोड़ में काँई आँतरो आयगो

परिशिष्ट–१

कठिन सबदां रा अरथ अर टिप्पणी

१. मीरा रा पद

निरखण – देखण। उघारी – नागी, वमतर हीण। वरन—रंग। वांण – सभाव, आदत। दावन पल्लो। रूसैला – नाराजव्हैला। भवसागर—ससार सागर। विष – जहर। गटकास्या –पीजास्यां। विनास – नासवान। काणि – मरजादा। तज के छिटका 'र, छोडकर। निसांण– नगारा। घुरास्या वजास्या। अविनासी अमर। गिरवर डूंगर। संगाती साथी, सीरी। डीकर वेटा। रेख – लीक। डीकरी वेटी। सरावती भरती।

२. रांणा प्रताप

अलस सरुपु— मरमातपा। आदेस—नमसकार। दया निधे – दया री खान। सुहृद—सजन, सदपुरुष। नरेस—राजा। नृप—राजा। मेदपाट—मेवाड। चितवै—याद करै। जग मौड—जग रो तुरंगो, जग मे ऊंचो। पावन—पवित्र। नामै—झुकावै। ढिग –नैड़ो। भूपत—राजा। रोसीलो —रोस मे भरियोडो, क्रोधित।

मृगराज—नाहर, सिंघ। पर्जै– वस मे आवै। अथाह—अथाग। पोयण—कमळ। दागळ की –छाप लगाई, दाबली। अणदागळ—विना दाग लागो। असवार—सवार। नृपति—राजा। अनमी—ऊंचै माथै।

पुहमी—धरा, पृथ्वी। लातरगा—गैलो बिसरगा, पथ भ्रष्ट हुगा। चीतै-चावै। पुनि पछै, फेर। रसत—रसद। गैर—दूजो।

रिपू—वैरी। पणधार—पण रो पूरो बात रो घणी। धिनो धन्न है। प्रवीण—चतर, सुजाण।

३: ढोला-मारू रा दूहा

गत—चाल। मति—वुद्धि। सील—सीतळ। महिलां—नार,लुगाई। सरहर—सरीखी। नमणी—लजाळू, विनयसील। खमणी—क्षमाशील, सहणसील। सुकोमळी—कंवळी। सुकच्छ—काळा भंवराळा केश। गरवी धीरी। सुचंग—रूपाळा, अणयाळा।

सा—वा। धण—पत्नी, नारी। दिट्ठ—दीठा दीसा। पुणिद—सांप, सरप। कीर—सुवो। भमर—भवरो। कोकला- कोयल। मयंद—नाहर, सिंघ। गयंद—हाथी। कुळी—गुळी, बीज। भल हळई—दिपै, चमकै। टकावळ—घणमोलो, वेस की मती। ऊनमियो—उमड़ आयो। गुहर—गाढो। गम्भीर—गहरो। संभयो—चितारै याद करै। वूठो—वरसै। मेड़ी-अटारी। सनेह—हेताळू, पति। कठालि-घटा,कांठल। परदेह परदेश। कुरळया—कुरळाया वावाहिया—पपैया। वाढ़त—काटै, चीरै। लोर कुरळाट, लम्बी आवाज। कुरलै—चीचावै। पळास—राकस खोटा मिनख। पानही—जूती। गळहार—गळा रो हार।

४. डिंगल गीत

ढांम—बरतण। त्रिय—नारी, लुगाई। घुड़ल्यो—घड़ा रा आकार रो छोटो पात्र जिण में जगां जगां छेद हुवै अर मांय दिवलै री जोत जागै। जुवा जुवा—न्यारा न्यारा। हेरू—खोजी। लोचपलोच—ओलूं दोलूं, चारूं मेर। अत—घणां। ऊपाड़ै—राखै। रंभा—रूपाळी नार। दोळी—नेड़ी सांकड़ी।

घट – टन । खळ - वैरी, दुमट । खांडे—तरवार । आतुर – वेगो, उतावळो । पिसण - वैरी ।

काळ - मोत । कूंभ - घड़ो । खुर— पग । रगडंता—घिसता । सुवैगमावै, वोळावै । चीतो – सोची । पदमण—रूपवती अर गुणवन्ती नार । मॉणूं - परणूं, सागै राखूं । पत्थर भाटो । बाँधै पत्थर गळै—गळा मे टोल वाँधै, कुलखणी नार पालै पड़ै । महमूंदी घण मोला कपणा री एक भाँत । धावळ– ऊनी घाघरो, ऊनी वसतर । पय दूध । वळिया लिखिया । वाळैमेटै । आंट –आँटा । कळपै—बिलखै । साई—स्वामी, भगवान । अरोगूं– जीमूं, खाऊं । धापर– पेट भर । लूखो—सूखो । आदम– आदमी । मोळा— धीमाँ, फीका । धोळेहर–महल, मालिया । ढूंढ—पुराणाँ घर, कुटी. झूंपड़ी ।

घुडल्या री कथा—मारवाड़ रे को साणा गाँव री बात है सन् १४९२ री २५ फरवरी रे दिन गाँव री छोटी मोटी वायरयाँ गणगोर रा गीत गाती सरवर री तीर साम्हीं चाली । उठै मोको देख अजमेर रा सुबेदार मल्लू खाँ रो साथी घुडले खाँ कन्यावाँ रो अपहरण कर अजमेर सामो भाज्यो ।

अै माड़ा समचार सुण जोधपुर रा राव सातलजी रा सेनापति सारंगदेव खीची आपरी सेना ले घुड़लेखाँ री गैल दबाई । रीस मे झळ लोळ हुयो खीची पूगता पॉण घुड़लेखाँ रो माथो वाड लियो । घुड़ल्या रो सिर भाळा में पिरोयाँ सारी वायल्याँ ने साथे लियाँ पाछा को साणै ढूंका । को साणा री कन्याँ घुड़ल्या रो माथो माँग लियो अर माथा न थाली मे घाल घर घर घुमायो ।

ई घटना री याद में राजस्थान रे गॉव गाँव मे गणगोर रे दिनाँ मे घुड़ल्या रो मेलो मंडै । गाँव रो कुम्हार छोटे घडै रे आकार रो घुड़ल्यो थापै । वी मे जगाँ जगाँ को चरा राखै । गाँव री वायल्याँ घुड़ल्या ने थाळी मे मेल माँय दिवलो जगा घुडल्या रा गीत गाती घर घर घूम ।

५. गीत

आहस—साहस, सौर्य । दोयण—डैरी । खळाडळा—तहस नहस । खवां—कांधो । खवा खांच—खांचा चूड़ो जिको खवां ताईं पहरै । खांवद—पति, धणी । यळा—धरा । छत्र पतियां—छत्रधारी राजा । छाणत—काळूस; कळंक । वापड़ा—वेचारा । वोतां—कायरां । जोतां जोतां—देखतां देखतां । चत्रमास—चौमासा । वादियो—भेडियो । दिखणी—दिखणी सूं अठै अभिप्राय जसवन्त राव होलकर सूं है । होलकर सन् १८०४–१८०५ में अंग्रेजो रो कड़ौ मुकावलो करचो ।

मडैठो देस—मराठा रो देस । वाजियो—भिड़ियो रीठ बजाई । भरतपुर वालो—भरतपुर रा राजा रणजीतसिंह जि काजसवन्त राव होल्कर ने सरण दीनी अर सन् १८०५ री ९ जनवरी रे दिन अग्रेजां री फौज ने परास्त करी । गाजै—वाजै । गजर—नगारा । धजर—जस, कीरत । नभ—आकास । गोभ—धरती । साहव—करनल-जेटलेण्ड अग्रेंजां री फौज रो सेनापति । महि—पृथ्वी । चीचाता—गरळाता, रोतां । महिळा—नारी । अवसांण—औसर, मौका । रजपूती—वीरता, सौर्य । जोधांण—जोधपुर । पहु—राजा । खूटा—वीतगा । परियांण—जस, कीरत । आकै—भावी वस । वाकै—वांकीदास आसिया । आसल—साचा । बखांण—वरणन ।

६. वीर सतसई रा दूहा

मीसण—चारण जाति री एक खांप । जंपे—वाजै । भड़खाणी—वीरां ने खावै । साळ—चुभै । इकडंकी—एक छत्र राज । साभाव—सुभाव । ऐस—भोग विलास । अकज—व्रथा, विना काम । आव—अमर । हूलसै—उमावै, खुसी मनावै । कंत—पति । कीव—किण भांत । विण—विना ।

वाढ़ियो—काटै । मांड पग—पग मांडणां, पगां रे महदी लगाणी । जंग—जुद्ध । धारा लागी जै—रण में काम आणो, तरवार री धार सूं कटणो ।

धणी - पति । दीजे घण रंग—खूब रंग लगाजे, धणी मंहदी मांडजे । वेस—सुरंगा कपड़ा । भव – जनम । भेटेस—भेटूंगी ।

लंबी आंगिया – पूरी बावा री काचळी (लंबी आंगिया विधवा नार धारण करै) आणीजै - लावो । टोटे—घाटो । मुवा – मरगा । बंब—नगारो । यार को—दूजा को, वैरी रो । वय—अमर । थण—बोबा । जामण – मा, जननी । पहुडै – नावडै । ऐण – घर । बीजी—दूजी । नीचा करसी नैण – सरमासी । थरहरै - धूजै । नूर—तेज । बगतर—कवच । ऊवडै – फाटै । टोटै – गरीबी । सरका – डोका । घातै – छावै । अधपतियां – राजा । हेली - सहेली । इळा – धरा, पृथ्वी । हालरिया—पालणां रा हालरा, झूला रा गीत । हुलराय—रमावै । पालणै – झूलै ।

७. लोक गीत

रेणादे—सूरज जी री जोड़ायत, सूर्य री पत्नी । बावल—पिता । रातो – लाल । मजीठ—लाल रंग । चीर—लूगड़ी, ओढ़णी । कूख – गोदी, पेट । भंवर—पति । कामणी—रूपवती नार । पोलां – दरवाजा । हसती—हाथी । कूंभ – कळस, मांगळीक कळस । वीर-भाई । सुवामणी – बहन-बेटी । कंवर—बेटो । छावा-बेटा । वसदेव जी रा छावा—किसन, अठै पति ने सम्बोधन करै । साजनियां री जायी—व्याही री बेटी, समधी री जायी, अठै पत्नी नैं सम्बोधम करै । वीरा—भाई । जामण जाई—माजाई बहन ।

८. राजस्थानी रा दूहा

परमारथ—दूजा री भलाई । तजो—छोडो । डाबर—तळाव । डोलतां—फिरतां । जोवै—देखै । प्राजळती—बळती । घटमांही—मन मे । खोटा घड़ै—बुरी सोचै । इखळास—मेळ । खेड़ा—गांव । आवड़ै—पाछा आवै

सुपह—राजा। पड़वै—सयनागार। पोढंताह—सोतां। धारां मे धसतांह—तरवारां वीच वड़तां। सांवळा—काळा। माठा—फीका, उदास। मन माठा हुवै—मन मे उदासी छावै। वाल्हा—प्यारा, हेताळू। वाहळा—नाळा। उंतावळा—वेगा। छेह—ओड़, नाको, अन्त।

६. छपना रा छंद

ककुभाळी—आंधी। कांटळ—घनघटा। कावळती-आंटा खाती, रीस दिखाती। वावल—वायु, वायरो। अंचल—पल्लो। कुलटाकृति—कुगैलां चालती नार री भांत। थरकत—धूजै। थिर—अचर। विहाडंवर—धूळ रा वतूळ। खर—तेज। गरदव—गधा। गरड़ावै—रीकै, वोलै। सायड—सांड, ऊंटणी। झेरावै—हर करै, दरद भरी वोली वोलै। सेढ़ा—दूध द्वणिया। वेरे—अरड़ावै। वेटांकर—बुरी तरह। हेरै—पतो लगावै, खोजै। हथहारू—हथारू, जो नित दूध दुवै। तिरषातुर—तिसाया मरता। खेळी—कुवाकी खेळ, वेरा री खेळू। धापड़—आड्ड, चाठ, ढाणो। वेरा—कुवा। धन—पसु धन। वणणाटा—चकरी खावै, भागता फिरै। गांजर—चड़स खेचणिया मिनख, कीलियो। पाचर—गुटको, चड़स री मांडल अर लाव ने जोड़ण री जगां लकड़ी री खील। धावै—वै वै। ईखण—देखण। अभलेखो—उणारत। गाढ़ी—गहरी। गयणांगण—आकास में। रज—धूळ। फुरियो—आयो। भादखो—भादवो, भादव मास। घुरियो—गाज्यो। नीरद—वादळ। तिसिया—तिसाया। सगारा—पशु। भूपर धरती पर। नर तिरसै—मिनख तिसाया मरै। विसिया—बिस वरसावणियां। अंगारा—खीरा। वरळावै—रोवै, गरळावै। आखा—दाणा, धान। अभिलाखै-चावै। भूभूबूबू—छोटा टाबर पाणी मागै पाणी रो पर्याय। भाखा—वोली। भाखै—वोलै। सूंपै—देवै। सीरावण—कलेवो। व्याळू-रात रो भोजन। वांसै—कैन; नेड़ा, सागै। वेला—समै। सांसै—घाटो सांसा पड़ जावै। ढ़ाढ़ां—पशु धन, गायां।

तांभाडै—गाय री बोली। ढीकै—बोलै। टीगरिम्रा—छोटा टाबर। रीनै—रोवै, री रावै। महळा—लुगाई। मुरधर—मुरूभौम, मारवाड़। पोग—पोहरा। बीजै—दूजै। सरधा—हिम्मत। झांकी मुत्र सेरी—मुत्र रो पंथ हेरै। सेरी—गळी। ढूंढी—हेरी, खोजी। ढूंढाहड—जयपुर वाटी। जुळिया—हालिया। पुळिया—हालिया। जाडा—घणा। जाडा धन वाला—ज्यां रै धनै घणा पशु हा। सिन्धू तट गुडिया—सिन्ध रो काठो जालियो, सिन्ध नदी री तीर पर जा भेळा हुया। तनपाळा—पैदल। गुज्जरधर—गुजरात। छपनै—सं० १९५६ रो काळ बरस। मोऊ—पिरजा। बलदा—बैना। गाडामल—गाड़ी में उचाळो घाळ। पाडा—भैंसा। रीराकर—रोता हुयां। डोरांतर—डोरा सूं बंधिया। करणा—दया। धावलिया—ऊनी घाघरा। तापड तू टोड़ा—फाटा पुराणां गावा, फाटोड़ा वसतर। खाता पीता सूं—धनवाना सूं। पेला खूटोडा—पहली ही दूबळा। नोळी—अस्थिपंजर। सासा नोळी मे—हाडहाड हुई दूबळी देही में सास अटका यां। वासे—पास मे। ओडी—छावड़ी। साखीणा—सम्बन्धी। माडै—हेरै। लाखीणा—ठावा मिनख, आछा आदमी।

१०. गांधी

तरसंत—ललचावै। रसणा—जीभ। फिरंग—अंगरेज। तोकी—उठाई, झाली। घण—घणा। लोहां हुवा—झाटक बाजी, जुद्ध हुवा। हथणापुर—भारत री राजधानी। भीटियो—हाथ लगायो। लोहन भीटियो—ससतर नीं झालियो। निसास—निसासा। खग—तरवार। गोरिया—नारिया। पिव—पति। मजीत—मस्जिद। भांण—सूरज। विण—विना। अमरत्थ—अमरत्व।

११. जुगवाणी, हेत चाहिजै

कुरब—मान प्रतिष्ठा। खपग्या—नास हुगो। आखड़िया—ठोकर खाई। आथड़िया—लड़खड़ाया। घूंस—हेकड़ी, जोरावरी। गाडर—लरडी,

भेड़ । जरवां—जूता । मौरां—मंगरा, पीठ । निरणा–भूखा तिसाया । गाभा–कपड़ा । ऊजड़ खड़ता–कुगैला चालता । पालैला—वरजैला । पूठै—पाछा । भावी–होणहार ।

सुभट—वीरवर, सूरमा । फजीती—दुरगत, दुरदसा । तक—औसर, मोको । लूंक—लूंमड़ी । खलीत—थैली । पलीता—आग री लपट, लुक । चेत—जुग । पीड़क—दुख देवा । करै खंखारा—डरड़ावण दिखावै, मौजा मांणै ।

भीडू—सीरी, सहायक । धाड़विया—लुटेरा । धूड़—धूळ, रेत । कळधर—मजूर, कारीगर । तुरंग–घोड़ा । कुमेत–राता वरण रा वेस कीमती घोड़ा । नेत—नियत ।

१२. बापू, पींजरो

खग—पंछी । गिगनार–आकास । डिगग्या–फिरगा, टळगा । पळकै–चमक । मुंवाली खा खा–चक्कर खा खा । गोरखधंधो–उळझाड़ रो काम मिनकड़ी—मिनकी, बिलाई । भख–खाण री चीज । भक्षक–खाऊ । एकठा–भेळा ।

१३. सूरज रे माथे सिंदूर

बूकिया—भुजां । गाज—बीजळी । सीळो—ठंडो । भूंगली फूंकणी । थाप—चाटो, थप्पड़, रैपट । अजे–हालतांई । सावळ सूत–भली भांत । गरीब निवाज–गरीब रो संगायती । उमरदराज–लांबी उमर ।

१४. चेत मांनखां, इंकलाब री आंधी

मांनखा—मिनख । खड़ण—जोतण । दोरो—कठिनाई सूं । लाटो–खळो । दावो—सी सरदी । रोळी—गेहूं री फसल रो एक रोग । कोळ–

वचन, प्रण । खड़ता—जोतता । इंकलाव—वदलाव, परिवर्त्तन । उर–हियो । वतूळो—वभूळ । घोचो—तिणवळो । उखरडी—ऊकरड़ी । मद–नमो । मद–पीवण—दारू पीवण । रड़वड़ता—एक दूजा सू टकराता, ठोकरां खाता । लाखां—लाख, चूडी वणावण री लाख । राली–ओढ़ण रो गूदड़ो । रंज—रेत रा कण । कामैतण—करसणी । लड़ाझूम—गहणा सूं लदी । रंक–साधारण मिनख । वाळी—वाल्ही, प्यारी ।

१५. बादली

डूंगा—गहरा । रमा—खेला । ग्रीखम—गरमी । दाझी—वळगी । वारणा-वलिहारी । गह डवर—घटाटोप । आखी–सारी । हिलोळा–लहरा । हियो हिलोळा खाय—मन घणो हुलसै । कांठली—वादळी । कोरण—काळा बादळ रे किनारे धोळा वादळ री रेख ।

आभै—आकास । छोळ में—उछाव मे । बीज—बीजळी । बीजळ—बीजळी । सोरभ—सुगन्ध । सांमिया—संभालिया । त्रिलूंबी–लिपटी, लटकी । वजड़—विना जोती धरती । सिधावो—पधारो । सिधो–जावो । तिसवारी–तिस, प्यास ।

१६. सांझ

लुकाती—छिपाती । दिवलो—दियो । मुळवता–मदरा मदरा हंसता । आगूंच—आगै । पळकती–चमचमाट करती । नैनकड़ी–छोटकी । चीलरिया–तालरा, टुकडा । रूपाळी—चादी री, सुन्दर । गुदळतो—मैलो हुतो । मालां–घुरसाळा । इदकै—घणो, अधिक । चाव–लालसा । परमोद–आणंद । झंवरां–पता सूं लडालूम हरी डाळी । झूटपुटिये–सांझ रो अंधेरो । वेळ–वेला, समै । लचकाणी—सरमावै । खोळै—गोद । ऊंगीज—झपकी ले । लीली—हरी । गोयर—गोंर । धवळ—धोळी । कूंडाळै—गोळो । खंख—रंज । कसूंबल—लाल ।

१७. सोवन थाळ

गीगलो–नान्हों टाबर, छोटो बेटो। सात्या––स्वस्तिक चिन्ह। सात्या-दवै––सात्या माडै, राजस्थान मे पुत्र जनम पर माडला री पूजा (सूरज नारायण री पूजा रे दिन) पर नणद जच्चा री साळ रे बारणै सात्यो माड जिण ने मागलिक प्रथा मानै। आंटो-टूटो––वांको, बळ खायोड़ो। फळसै––बारणै। सगो––जमानो। संवारै––सुधारै। भाळ––डोर।

१८. इण धरती कद मानीहार

बीजण––बीज बावै। भाखर––डूंगर। आभयो–आकास। हुलरावै–रमावै। मंदरी––धीमी। सोनल––सोना रा। रूपाळी––चांदी री। रूपाळी-रातां––चांदणी रात। मायड़–मा। झला––लपटा। दीपै–चमकै। सई को–सौ सालो, शताब्दी।

डूंगजी––राजस्थान रा नामी धाड़ैती जिका डूंगजी जवाहर जी रा नाव सूं जाण्यो जावै। भोपा वांरी वीरता रा गीत गावै। आ बात प्रसिद्ध है के डूंगजी अंग्रेजा री छावणी लूटली। अंग्रेज डूंगजी ने आगरा रा जिला में कैद-कर दीना। जवाहर जी आपरा संगी साथियां ने लेर एक दिन मोको देख हमलो कर दीनो। आगरा री जेल तोड़ डूंगजी ने छुड़ा लाया।

स्यामसिह––१८५७ री राष्ट्रीय क्रान्ति रा नामी जोधा।

खुसियाल–आहुवा ठाकर खुसालसिह चांपावत जिका १८५७ रे क्रान्ति मे अंग्रेजां री फोज रो डटर मुकाबलो कियो। दो बार अंग्रेजा री फौज रा पग पाछा दिरा दिया। अंग्रेज सेनापति कप्तान मेसन ने मार लियो अर क्रान्ति रो झंडो ऊंचो उठायो।

कंवर सिह-साहबाद जिले रे गॉव जगदीसपुर रा राजा कंवर सिंह जी का अस्सी बरस री ऊमर मे १८५७ री क्रान्ति में कूद पड़्या। अंग्रेजा रो खजानो लूट लियो। कप्तान डनवर री सेना ने मार भगाई। दूजा दो

सेनापति सेना लेर चढाई करी रण ने मव ने हरा दिया। गंगा पार करेहा अते हाथ मे गोली लागी। २३ अप्रेल १८५८ रे दिन काम आया।

१९. अरज; हर

आखर=अक्षर। मूंन—मौन। सूनियां—सूक्तियां, अमोलक वातां। किरियावर—ईसान, कृपा। सिरजूं-वणाऊं। परसूं-भोट्ं। निरखूं-देखूं।

धारोळा—वादळा। रेला—धार। हर-याद। रळकाती-टपकाती। डावर—तळाव, नाडी। आवा—आम। हींडा—झूला। धायोड़ी—निरपत हुयोड़ी। विलमावै—मुळावै, फंमावै। मोटी नगरी—अठै वम्बई मूं अभिप्राय है। कूंकू—केसर। वधावैला—आदर सतकार करैला। आंवो—वेगो। सतखंड—सतखणी। गोली-दासी। खिवै—चमकै। इन्नरिमो—इन्दर, इन्द्र। ढूलो—गुढो। ढूली—गुढी। कंथ—पति। कांमणिया—सरूप लुगायां। सिग-रथ—घणो लाडलो। जूनी—पुराणी। अलवेली—नखराळी, छैली।

२०. बाजार को लालटेण

धणी—धोरी मालिक। खूं—वताऊं। वैण—वचन। नितकी—रोजीना। गैल—गैलै। भाती—चोखी लागती। तळै—नीचै, हटै। घैण-लेणो-माळै—ऊपर-ओठा—पाछा। स्यावै—मन मे राजी हुवै। भैणा—बहिना। टपटेळा—अन्धेरा मे धक्का खाणो।

२१. गाड्यां निकळे घोला रेग्या

अळगै—दूरा। ओझरया—दीखण सूं रहगा। पंथड़ा—गैला। चंवरी-व्याव रो मंडप। गोख—गोखा। गरकता—पड़ता। वटाऊ—पंथी, गैला सरु, पावणो। मुरथल—मरुधरा। मुरथळ तिरसा—मृग तृष्णा। सौरभ—सुगंध। वेजा—अणहोणी, अनुचित। धाड़ो—लूट, डाको।

२२. घूघरा

सोरमार—भेळोकर। नाळी—न्यारी। अमरायां—आमां रा बाग। क्वांड—किवांड़। उलग्यो—वड़गो, धंसगो। खसबू—सुगन्ध। कसूम्वो—लाल रंग, कसूमल रंग।

२३. काळो घोड़ो

धनख—धनस। धोरां—टीवां। विकराळ—डरावणो। रड़कै—चुभै। आळ जंजाळ—आळ पताळ सपनां। विडरूप—कोजो, कुरूप। ओळखतो—पिछाण तो। टोवतो—हेर तो, पतो लगातो। काळस—कालूंस।

२४. मुरझायोड़ो पल

अतीत—वीता जुग। उनमांन—समान। धुंधलाता—फीका पड़ता आपघत—अपघात। सोसन्या रंग—गहरो चमकीलो नीलो रंग। दाझियोड़ी—वल्योड़ी। कोजी—कुरूप। झीज्योड़ी—वीत्योड़ी, वोळायोड़ी। गांगरत—रोगान, रैवार।

२५. कठै ई कीं व्हेगो है

विसरगो—भूलगो। उगसण्यां—हांडी धोवण री तिण कला री कूंची। घोनां—वकरी। दिन गे—दिन उगे। वेरो—कुवो। कांवळा—गिरजड़ा। ओट चोड़ी—भोमर मे दवायोड़ी। ऊणमणी—उदास।

४. यगण—आदि लघु—। ऽ ऽ

५. जगण—मध्य गुरु—। ऽ ।

६. रगण—मध्य लघु—ऽ । ऽ

७. सगण—अन्त गुरु—। । ऽ

८. तगण—अन्त लघु—ऽ ऽ ।

छन्द रा चरण में गण री गणना वरण रा लघु गुरु रूप रा आधार पर की जावै। आ गणना गण वर्ण छन्दां में हुवै। तोटक, मोतीदाम अर भुजंग प्रयात इणी जात रा छन्द है, जिणमें हरेक चरण में बारह वरण आवै, पण इन में परस्पर गणां रो भेद पायो जावै। उदाहरण स्वरूप तोटक में बारह वरण जिण मे चार सगण आवै।

कुसमालय लेन सुवास घटां।
झलकै सपतान करा झपटां।

मोतीदाम मे बारह वरण जिणमे चार जगण आवै।

। ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ ।
जसोमति पूत नचै फण जाण।

इणी भांत भुजंग प्रयात मे चार यगण आवै।

धकै चाढ़वो माग रो त्याग धारा।

अथवा—

गुसाईं रहै जागता राग गावै।

छन्द रा भेद

छन्द तीन भांत रा हुवै।

(१) मात्रिक

(२) वर्णिक

(३) मुक्तक

मात्रिक छन्द—जिण छन्द में मात्रा री गणना रा आधार पर रचना हुवै। इण छन्दा मे वरणा री गणना नी हुवै। दूहा, सोरटा अर छप्पय इण जात रा छन्दा मे आवै। पण प्रत्येक री न्यारी न्यारी पिछाण है।

वार्णिक छन्द—जिण छन्द मे वरणां री गिणती निश्चित हुवै अर गुरु लघु रा क्रम निश्चित हुवै। वार्णिक छन्द मे जिण छंद रा गण निश्चित हुवै गण वन्ध छन्द री गणना मे आवै।

मुक्तक छन्द—वै छन्द जिका मात्रा अर वरणां रा वन्धन छिटका दिया व्है मुक्तक छन्द कहावै।

१. दूहा

राजस्थानी साहित्य में दूहा अर सोरठा छन्द रो घणो प्रयोग मिलै। दूहो मात्रिक छन्द है। दूहा मे चार चरण हुवै जिण री मात्रा री गणना इण भांत की जाय।

पहला अर तीजा चरण में प्रत्येक में १३ मात्रा।
दूजा अर चौथा चरण मे प्रत्येक में ११ मात्रा।

पहलो अर तीजो चरण विषम कहावै,
दूजो अर चौथो चरण सम कहावै।

दूहा रा विषम चरण मे तेरह मात्रा अर सम चरण में ग्यारह मात्रा आवै। सम चरण रा अंत में लघु हुवै—

उदाहरण--

इला न देणी आपणी, हालरियां हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण वडाई माय॥

उदाहरण—

। । ऽ । । । । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ । । =२४

पट जेवर पहराय, सिया सिण गार सजोगर

छप्पय रा पाछला दोनूं चरणा में सूं प्रत्येक में २८ मात्रा आवै अर प्रत्येक चरण में १५–१३ पर यति आवै ।

उदाहरण-

। । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ ऽ । । । । । । ऽ । ऽ =२८

कमरो जहान जिणनूं ... भोम वगम छमगो ... ।

छप्पय छन्द री मात्रा री गणना प्रथम चरण सूं चौथे चरण तांई प्रत्येक चरण में–२४ मात्रा । पांचवां छठा चरण में प्रत्येक में–२८ मात्रा ।

उदाहरण--

१. दुरजोधन जाणियो, पाट हसणांपुर बैठूं ।
   अेहड़ी नद जाणतो, जाय जळ भीतर पैठूं ।
   सह कैरव ने साथ, लियो आरम्भ मुद्रा नूं ।
   मन री मन में रही, गुवो भीम री गदा नूं ।
 त्रयलोक नाथ होतव तणां, अन्यथ करै कुण आगरो ।
 कवि ओप अज्ञानी नर कहै, नर्व री तेरह करा ॥

२. भूंडण यूं भाखियो, क्रणै हेरण मन हूंता ।
   अरै भाण आथियो, मरै सूरां जिम सूंता ।
   डाढ़ाळा डार रा, ऊडर थारै वळ आखी ।
   नाह जाग नाहरा, राह खोटी कर राखी ।
 चे वड्या वाड़ आड़ै चढ्या, पाड़ै पोड़ा फोर हूं ।
 खागैल ऊठ पाडाखुरा, आडा खल न ओर हूं ॥

३. डरी काय भूंडणी, घणा नाहर नन घाटां ।
   सीह नाह साच रै, वहै सूरो जिण वाटां ।
   दातल द्रग देखिया, छतै हासळ वळ छाडै ।
   नह हिम्मत नाहरां, मगां सूरा पग मांडै ।

थूं मोच करै काळी थकी, वाळी नार वराहरी।
ताहरी राह रो कै तिको, नाहर जण्योन नाहरी॥

४. कवित्त

कवित्त वर्णिक छन्द है। जिणमें वरणां री गणनां हुवै। कवित्त मे चार चरण हुवै। प्रत्येक चरण मे ३१ वरण आवै। प्रत्येक चरण मे १६ वरण अर १५ वरण रे मध्य यति आवै। इण भांत रा कवित्त ने मन हरण कवित्त अर धनाक्षरी रा नाम सूं भी वतळावै।

वरणा री गणना

मृगपति मारे जात कवळ विडारे जात,
जस हल कारे जात दस हूं दिसान में।

प्रथम ओळी में वरण—१६
दूजी ओळी मे वरण—१५

इण भांत कवित्त रा एक चरण में ३१ वरण आवै।

उदाहरण—

१. किलो कोट ओट न अकेलो चढ्यो साह ऊ पै,
मढ्यो मजपूती रजपूती की मजल पै।
कवि हिंगलाज रण काज बाज चेटक की
राण चंपराण आन पूगो खान दल पै।
ता समै कुबोल वहलोलखां उचारयो तव,
मंडलाग मारयो ता कुजीव के कमल पै।
जोध जग जत्ता सोध वारू रांण पत्ता हू पै;
वारू जग जत्ता खग कत्ता की कतल पै।

दूजो उदाहरण—

कौलपति जकि जात मेद नी मचकि जात,
लचकि लचकि जात नलिगत मान मे।
सागर उमगि जात महिधर डिगि जात,
जागि जात संकर समाधि डुली ध्यान में।

राम दिन दुल्लह के प्रबल पयान होत,
विकलित प्रान होत अरि थान थान मे।
मृगपति मारे जात कवळ बिडारे जात,
जस हुल कारे जात दम हू दिमाग मे॥

५. मोतीदाम

मोतीदाम छन्द वरण गण बन्ध छन्द है। इण छन्द मे वरणा री गिणती हुवै अर इण रे मागै गणा री निवाह हुवै।

मोतीदाम छन्द मे चार चरण हुवै। प्रत्येक चरण मे १२ वरण आवै। प्रत्येक चरण मे चार जगण (। ऽ ।) आवै।

१२ वरण अर चार जगण सूं मोतीदाम छन्द री रचना हुवै। चरण अर गणा री गणना—

। ऽ ।   । ऽ ।   । ऽ ।   । ऽ ।
झवाझव बीज उडै खग झाट।

या । ऽ । ।   ऽ । ।   । ऽ ।   । ऽ ।
डकावत नाहर नेत दकार

उदाहरण—

१. सिवा सिव दारण झेलत सीस।
उझेलत पत्र उमा कज ईस।
परस्पर दम्पति सम्पति पाय।
हिलोहिक भेट करै हर साय।

२. उडै गति गेद नरा उतमंग।
गहै झट कंज करा जटगंग।
महानट हाथ हकालत मुण्ड।
रोळा मझ घुम्मर घालत रुण्ड।

अलंकार

अलंकार काव्य रो सिणगार है। जिण प्रयोग सूं काव्य रो रूप निखरै, सोभा वढै, अलंकार री कोटि मे आवै।

काव्य मे चमत्कार ल्या वाळी उक्ति अलंकार कहावै ।

अलंकार रा भेद—

काव्य में सबद अर अरथ दो न्नू मिलै । इण भांत अलकार रा दो मोटा भेद हूवै ।

१. सबदालंकार

२. अर्थालंकार

जठै सबद रो चमत्कार दीमै सबदालंकार हुवै अर जिण उक्ति रै अर्थ में चमत्कार आवै अर्थालंकार कहावै ।

अलंकार री पहचाण

१. वैण सगाई

वैण सगाई सबदालंकार है ।

राजस्थानी रा जूना ठावा कवि वैण सगाई अलकार रो घणो निर्वाह कीधो । वैण सगाई वरण समानता है । छंद मे वैण सगाई रा प्रयोग सू, रस री पुस्टी हुवै ।

छंद रा किणी चरण रो प्रथम आखर उण चरण रे अ'तिम सबद रा पहला आखर सू मेळ खावै अथवा मध्य या अ'तिम आखर सू मिलै उठै वैण सगाई अलंकार कहावै ।

घण कैमर घोलियां,
होद लेवै हीलोळा ।

इस चरण में पहलो आखर 'घ' अर इणी चरण रा अ'तिम सबद घोलियां में भी पहलो आखर घ आयो । इण भांत घण अर घोलियां मे अर होद अर हीलोळा में वैण सगाई आई है ।

माता भूमि मान,
पूजै राण प्रताप सी ।

इणसोरठा री झड़ा में वैण सगाई रो निर्वाह-हुयो है ।

उदाहरण—

१. गह भरियो जगराज
मद छकियो चालै मतै ।
कूकरिया घिण काज,
रोय घुसै क्यूं राजिया ।

२. अकबर पथर अनेक,
के भूपत भेळा किया ।
हाथ न लागो हेक'
पारस राण प्रतापसी ।

३. माटी रो टाम जोत तिण मांहे,
घण त्रिय फेरे घणा घरे ।
घुडल्यो केतिक बार घूमसी,
फोडण वाळा लार फरे ।

वैंण सगाई मे आदि मेळ री भांत मध्यमेळ अर अन्त मेळ रा उदाहरण भी मिलै ।

पण उत्तम कोटि री वैंण सगाई आदि मेळ यानी जावै ।

मध्यमेळ—

१. रोसीलो मृगराज,
२. रण हालीजै चारणां,

अन्तमेळ—

१. सदा कहाऊं दास,
२. रण मे दोय हजार,

२. यमक

यमक सबदालंकार है ।

जठै एक सबद री अनेक वार आवृत्ति हुवै अर प्रत्येक वार विण रा न्यारा न्यारा अरथ नीसरै यमक अलंकार वाजै ।

उदाहरण--

दियो सबद सुणतां दुसह तन मन लागै लाय
सूम दियो न करै सदन, परव दिवाळी पाय ।

इण दूहा में दियो सवद दो वार आयो। पहला चरण मे इणरो अरथ है देणो अर तीजा चरण मे दियो दिवले रे अरथ मे आयो है।

दूजो उदाहरण—

चूडो चमकीलो, कच वीडी चमकै ।
दामण दमकीली, दामण सी दमकै ।

इण छंद में दामण सबद दो वार आयो। पहला दामण रो अरथ सूं न्यारो है।

दामण=जोड़ली मूंदड़ी
दामण=वीजली

किणी छंद मे सवद या उणरा अंस री आवृत्ति सूं भी यमक अलंकार वणै पण उठै सवदांम निरथक हुवै, कोरी आवृत्ति मात्र आवै।

उदाहरण—

अरज एक ऊचरण, चरण छूंवण हूं चाऊं। अठै ऊचरण सें चरण सवदास है, जिको अगला चरण सवद रे सागै यमक अलंकार वणावै।

दूजा उदाहरण—

१. सारंग ले सारंग चली सारंग पूगो आय।
२. मायड़ खाय दिखाय थण,
   धण पण वळय वताय।
३. पावक माथै पाव।
४. भीड़ै वाह दुवाह चर,
   भीड़ै नाह सनाह।

३. श्लेष

श्लेष सवदालंकार है। जठै सवद एक वार आवै पण प्रसंग रे सागै विण रा न्यारा न्यारा अरथ नीसरै, श्लेष अलंकार कहावै।

उदाहरण—

नदी नीर अर कृपण धन, हर कोई हर लेत।
वलिहारी नृप कूप री, गुण विन वूंद न देत॥

इण दूहा में गुण सवद रा प्रसंग वस न्यारा न्यारा दो अरथ नीपरै। नृप रै सागै गुण रो अरथ-सद्गुण। कूप रा प्रसंग में गुण रो अरथ डोर।

उदाहरण —

दरसै मुख आगळ दात दुवै।
वक वादळ आगळ जाण वुवै।

हाथी रा आगा आया दो दात इमा लागै जाणै काळा वादळ रै आगै धोळ बगुला उड़ै। अठै दाता ने बगुला मान लिया। इण भांत रा प्रयोग उत्प्रेक्षा अलकार वाजै।

दूजा उदाहरण -

१ मूरी काली वादळी, वीजळ रेख खिचाय।
जाण कसौटी ऊपरा, सुवरण रेख सुहाय॥
२. दीधा दिस दिस लू विया, उठै कत भजाय।
कुभ करण रा झाड़िया जाणै वंदर जाय॥
३. चख चोळ मूंछ भूंहा चढ़ी, तामस ऊठि तमोगणी।
मेहरी गाज जाणै मरद सारदूळ काना सुणी॥

७. अन्योक्ति

अन्योक्ति अर्थालंकार री गिणती मे आवै।

जठै अप्रस्तुत वात वतार प्रस्तुत वात रो वोध करावै, अन्योक्ति अलकार हुवै।

अन्योक्ति अलकार मे कोई वात दूजा पर ढाल र कही जावै। वारो एक न्यारो ही अरथ नीसरै।

उदाहरण—

हंसा सरवर ना तजो जे जल खारो होय।
डावर डावर डोलतां भला न कहसी कोय॥

अठै हंसा ने संवोधित कर वात किणी दूजा ने कही गई है।

दूजा उदाहरण—

१. माळी ग्रीखम मांय पोख घणो द्रुम पालियो।
जिणरो जस किम जाय, अत घण वूंठा हो अजा॥
२. गह भरियो गजराज, मद छकियो चालै मतै,
कूतरिया विणकाज, रोय घुसै क्यूं राजीया॥